चन्दामामा
अगस्त १९९२
4
Rs.

C for Clown, for Caramilk. C for Cowb

Cara or Clown, C r Caramilk. C

Cool, C milk. C Clown, C for

mil Cool, C for Car k. C for C

fo milk. C for Cool, C f ramilk.

Cov y, C for Caramilk. C for C , C fo

milk. C for Cowboy, C for Carami C f

for Caramilk. C for Cowboy, C for Caram

Clown, or Caramilk. C for Cowboy, C

milk. C Clown, C for Caramilk. C for

for C C for Clown, aramil

Cool, Caramilk. n, C for

milk. f Cool, C for C milk. C for C

for rami . C for Cool,

Cowboy, C for Caramilk.
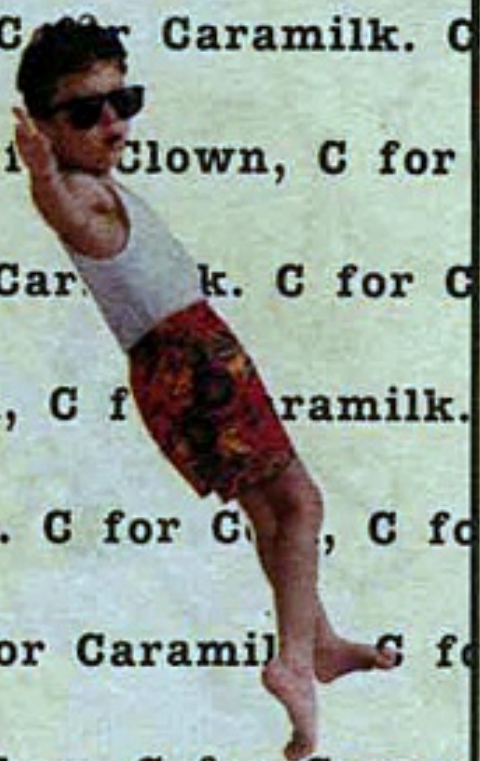
CARAMILK

CARAMILK

Parry's

HTA 8194.

नये डायमण्ड कामिक्स (जुलाई 92)

प्राण का—बिल्लू-मि. इंडिया	8.00
प्राण का—दाबू और खजाने के लुटेरे	6.00
चिम्पू और सोने के तस्कर	6.00
ताऊजी और जादुई कालीन	6.00
मामा भांजा और नहले पर दहला	6.00
फौलादी सिंह और अंतरिक्ष का नगर	6.00
पलटू और जादूगर साम्भा	6.00
मैण्ड्रेक-7 (डाइजेस्ट)	15.00
अण्डेराम डण्डेराम -2 (डाइजेस्ट)	15.00

डायमण्ड कामिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

जीवन में भर लो रंग डायमण्ड कॉमिक्स के संग!

अंकुर बाल बुक क्लब के सदस्य बनें
और अपने जीवन में खुशियों और मनोरंजन की बहार लाएं

मिलें, क्लब के अन्य सदस्यों से!

चाचा चौधरी, मन्नू मोटू, बाब, पिंकी, बिल्लू, ताऊजी, फौलादी सिंह, चन्नी चाची, दाबू, महाबली शाका, चाचा भतीजा, राजन इकबाल, जेम्स बांड, फैंटम, मैन्ड्रेक... और कई अन्य मशहूर पात्र।

इन सब पात्रों से मिलाने का श्रेय 'डायमण्ड कॉमिक्स' को है जो देश में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स हैं और हर महीने अंग्रेजी, हिन्दी, गुजराती, बंगाली और मराठी भाषाओं में प्रकाशित किए जाते हैं।

और कितना आसान है अपने इन प्रिय पात्रों से मिलना!

आप एक बार 'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाइए फिर न तो बार-बार आपको अपने मम्मी पापा से डायमण्ड कॉमिक्स लाने के लिए कहना पड़ेगा और न ही बार-बार अपने पुस्तक विक्रेता को याद दिलाना पड़ेगा, तब आपको यह चिन्ता भी नहीं रह जाएगी कि कहीं बुक-स्टाल पर डायमण्ड कॉमिक्स समाप्त न हो जाएं। क्लब का सदस्य बन जाने पर आपको विशेष लाभ यह रहेगा कि आपको आगामी कॉमिक्स की सूचना भी यथा समय मिलती रहेगी।

मुफ्त उपहार!

'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बनने पर आपको पहली वी.पी. से 'चिल्ड्रन जोक्स' नामक पुस्तक उपहार स्वरूप मुफ्त भेजी जाएगी तथा आपके जन्मदिन पर एक विशेष उपहार भी मुफ्त भेजा जाएगा। समय-समय पर अन्य उपहार भी आपको मिलते रहेंगे।

डाक खर्च माफ!

'अंकुर बाल बुक क्लब' के सदस्य बन जाने पर आपको हर महीने वी.पी. से घर बैठे डायमण्ड कॉमिक्स प्राप्त होते रहेंगे। कहीं आने-जाने की भी जरूरत नहीं। जो डाकिया आपका कॉमिक्स पैकेट लेकर आएगा, आपने केवल उसे कॉमिक्स का मूल्य ही देना है। डाक खर्च भी आपको नहीं देना पड़ेगा।

कितना सुगम है 'अंकुर बाल बुक क्लब' का सदस्य बनना!

आप केवल नीचे दिये गए कूपन को भरकर और सदस्यता शुल्क के दस रुपये डाक टिकट या मनीआर्डर के रूप में भेज दें।

सदस्य बनने पर हर महीने आपको 3/-रु. की बचत वी.पी. पर और 7/-रु. की बचत डाक खर्च पर होगी। यानी आपको 10/-रु. की बचत और 12 वी.पी. लगातार छुड़वाने पर आपको 12/-रु. मूल्य की एक डाइजेस्ट उपहार स्वरूप मुफ्त मिलेगी।

अपने मित्रों को सदस्य बनाएं, इनाम पाएं!

यदि आप अपने चार मित्रों के नाम पते व सदस्य शुल्क (10/-रु. प्रत्येक सदस्य) भिजवाएंगे तो आपको उपहार स्वरूप 12/- की एक डाइजेस्ट मुफ्त दी जाती।

हाँ! मैं "अंकुर बाल बुक क्लब" का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं और आपके द्वारा दी गई सुविधाओं को प्राप्त करना चाहता/चाहती हूं। मैंने नियमों को अच्छी तरह पढ़ लिया है। मैं हर माह वी.पी. छुड़ाने का संकल्प करता/करती हूं।

नाम ____________________

पता ____________________

____

डाकघर __________ जिला __________ पिनकोड __________

सदस्यता शुल्क 10/-रु. डाक टिकट/मनीआर्डर से भेज रहा/रही हूं।

मेरा जन्मदिन ____________________

नोट : सदस्यता शुल्क प्राप्त होने पर ही सदस्य बनाया जायेगा।

पज़ल पैक

चार पुस्तकों का तीसरा सैट

अब प्रस्तुत है, प्रथम सैट नं. 1 से 4 व द्वितीय सैट नं. 5 से 8 की अपार सफलता के बाद पज़ल पैक का तीसरा सैट (नं. 9 से 12)

जल्दी कीजिए! आज ही अपने स्थानीय पुस्तक विक्रेता से प्राप्त करें या हमें लिखें। मूल्य प्रत्येक 5/-

चन्दामामा

अगस्त १९९२

★

अगले पृष्ठों पर

★

एक प्रति : ४ रुपये

वार्षिक चन्दा : ४८ रुपये

MAGGI CLUBBERS FUN LOVERS
MAGGI CLUB
चोर को पकड़ो-मैगी
हू-डन-इट रहस्यमय खेल में.
मैगी रेडर्स ऑफ़ दि रेड स्टार
गेम में ग्रहों पर विजय पाओ.
अब मौज-मस्ती भ
साहसिक खेल
मैगी क्लब के सदस्यों के लिए मुफ़्त उपहा
आओ बच्चो! मैगी क्लब में शामिल होकर मैगी के मौज-मस्ती भरी चमत्कारी दुनिया में रंग जमाओ!
बस यह लोगो मैगी नूडल्स के 5 रैपर् के सामने वाले हिस्सों से काटकर हमें भेज दो. 6 से 8 हफ़्तों के बीच तुम्हें मैगी क्लब की ओर से तुम्हारी पसंद का मस्ती-भरा उपहार मिल जाएगा.
अपनी पसंद का उपहार मंगाते समय अपना नाम, पता और जन्म-तिथि ज़रूर लिख भेजना. और हां, अगर तुम पहले से ही मैगी क्लब के सदस्य हो तो अपनी सदस्यता संख्या अवश्य लिखे भेजना. यदि तुम अभी तक सदस्य नहीं बने हो तो यह मौका मत चूकना! अपना विवरण भेजते समय सदस्यता कार्ड भी मंगवा लेना. तुम्हारे उपहार के साथ हम तुम्हारा मैगी क्लब सदस्यता कार्ड भी मुफ़्त भेज देंगे.
हमारा पता है
मैगी क्लब
पो.ऑ. बॉक्स 5788, नई दिल्ली-110 055
मुफ़्त मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमिल्स' क्विज़ पुस्तिका!
अपने हर 2 उपहारों के साथ तुम मुफ़्त ले सकते हो मैगी 'वर्ल्ड ऑफ़ एनीमिल्स' क्विज़ पुस्तिका.
MAGGI
2-minute noodles

INTRODUCES
the
NEW
CRAYON COLLECTION
My Little Darling
Mr. Clean
With Every Pocket
FREE
2 Erasers
PERFUMED CRAYONS
PLAYONS
CRAYONS YOU CAN PLAY WITH
THE DOUBLE A COMPANY
JOIN THE DOTS & COLOUR THE PICTURE WITH Mr. Clean CRAYONS AND WIN FABULOUS GIFTS
Fill in your name & mail it to the address mentioned below.
NAME: AGE: ADDRESS:
EXPORT ENQUIRIES SOLICITED
Mr. Clean
FUN TIME INC. 502, NIRANJAN BLDG., 99 MARINE DRIVE, BOMBAY-2 PH-310258, 317186

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

नये निर्माणकर्त्ताओं से

पचास वर्ष पहले, ठीक-ठीक कहें तो ९ अगस्त, १९४२ को, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में ब्रिटिश शासकों के खिलाफ 'भारत छोड़ो' का नारा लगाया था । पांच वर्ष बाद देश पूरी तरह आज़ाद हो पाया ।

किसी भी देश के लिए उसका संविधान उसकी सबसे पवित्र थाती होता है । लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, वे लोग जिन्होंने अपने लिए संविधान तैयार किया था, यह ज़रूरी समझने लगते हैं कि संविधान में कुछ परिवर्तन हो या नया संविधान ही अपना लिया जाये ।

हाल ही में सोवियत संघ टूटा और उसके कुछ गणतंत्र एक नये संविधान के अंतर्गत आपस में मिल गये । इसी प्रकार दो जर्मनी भी एक साझे संविधान के अंतर्गत आपस में मिलकर एक हो गये । युगोस्लाविया ने नया संविधान अपनाया है । कंबोडिया और थाइलैंड ने अपने-अपने संविधान फिर से तैयार करने लगे ।

भारत का संविधान १९५० में अपनाया गया था । इस बात को ४२ वर्ष हो चुके हैं । तब से अब तक इसमें लगभग साठ बार संशोधन हुए हैं । देश के कुछ प्रबुद्ध व्यक्तियों ने अब यह सवाल उठाना शुरू कर दिया है: क्या वह समय नहीं आ गया जब हम अपने संविधान पर नये सिरे से विचार करें और इसके बदले में अधिक सामयिक और परिपक्व संविधान लायें ताकि यह देश एक शांतिपूर्ण सच्चरित, न्यायपूर्ण और प्रगतिशील राष्ट्र बन सके?

जब हम अपने संविधान के बारे में सोचते हैं तो हम आदरपूर्वक इसके निर्माणकर्त्ता, यानी डॉ. भीमराव अंबेडकर, को भी याद कर लेते हैं । उनकी जन्मशताब्दी हमने हाल ही में मनायी है । आइए, हम आशा करें कि हमारे निर्माणकर्त्ता एक ऐसा संविधान देंगे जो राष्ट्र के लिए सर्वोत्तम हो!

वर्ष : ४४ | अगस्त १९९२ | अंक : १२
एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

अफ़ग़ानिस्तान में एक नयी व्यवस्था कायम हो गयी है, और इसके साथ ही शांति भी लौट आयी है। लगभग १४ वर्षों तक यहां युद्ध की स्थिति बनी रही जिसमें मुजाहिदीन छापामार पहले बबरक कमाल की, और बाद में डॉ. नजीबुल्लाह की कम्यूनिस्ट सरकार से लड़ते रहे। यह कम्यूनिस्ट सरकार सोवियत संघ द्वारा बैठायी गयी थी। अंत में इन्हें आपस में भी, और कठमुल्लाओं से भी, लड़ना पड़ा।
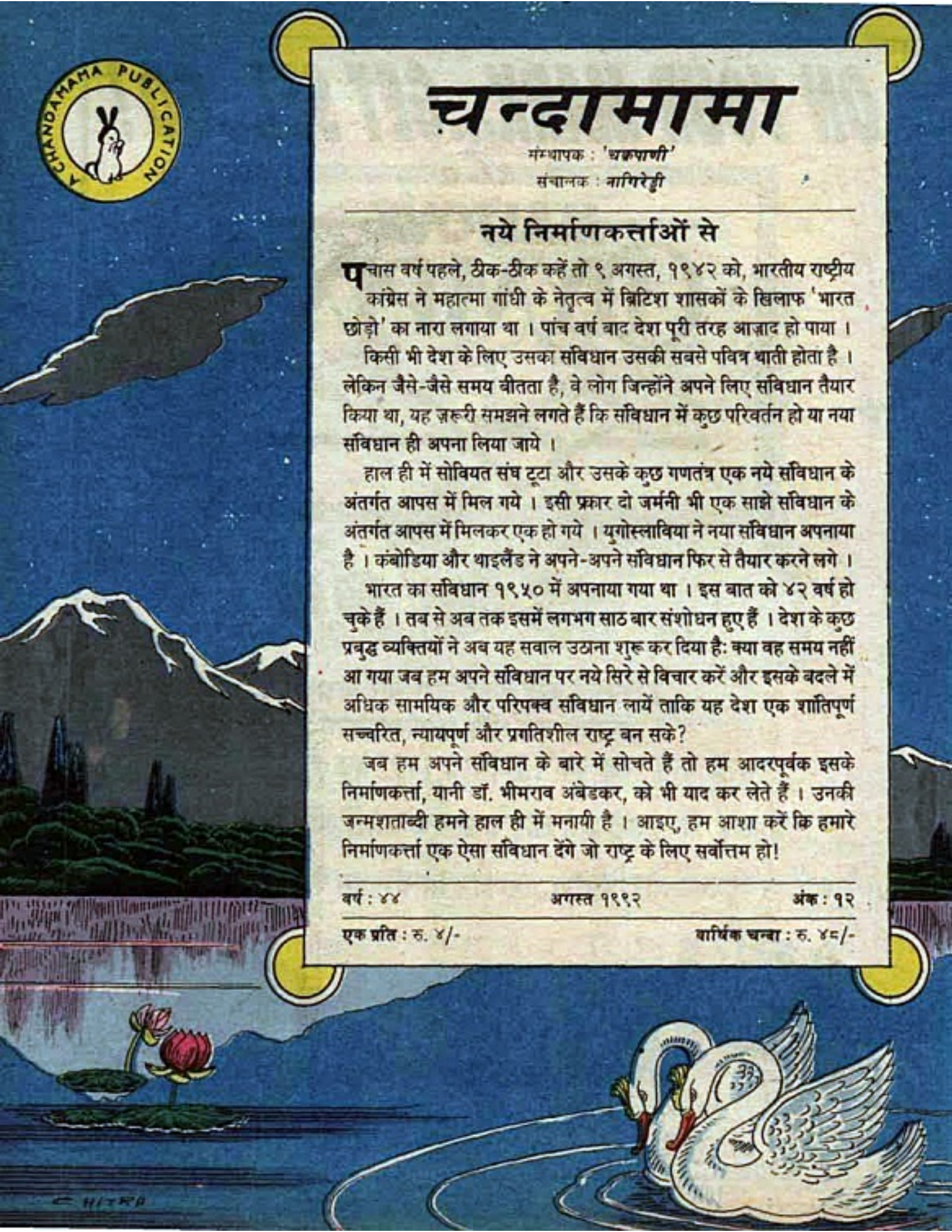
डॉ. नजीबुल्लाह ने स्वयं ही राष्ट्रपति के पद से हट जाने के पेशकश की, और मुजाहिदीनों ने उनकी जगह प्रो. सिबगतुल्लाह मुजद्दी को चुना। अंतरिम परिषद् के प्रमुख भी वही बनाये गये। प्रो. सिबगतुल्लाह ने परिषद् के लिए ३१ सदस्य नियुक्त किये और हिज़्बे-इस्लामी गुट के कट्टरपंथी नेता गुलबुद्दीन हिकमतयार से अनुरोध किया कि वह भी उसमें शामिल हो जायें और कोई चोटी का पद संभाल लें।

लेकिन हिकमतयार ने कई शर्तें रखीं। उनमें से एक शर्त यह थी कि जनरल अब्दुलरशीद दोस्तम के नेतृत्व वाले उज़्बेक सैनिक (मिलिशिया) काबुल से बाहर चले जायें, क्योंकि ये नजीबुल्लाह सरकार की मदद करते रहे थे।

प्रो. सिबगतुल्लाह चाहते थे कि हिकमतयार उनकी

अंतरिम सरकार में बिना किसी शर्त के शामिल हों। वह तो शामिल नहीं हुए, लेकिन कम-कट्टरपंथी, जमाते- इस्लामी, के नेता और हिकमतयार के पक्के प्रतिद्वंद्वी अहमदशाह मसूद शामिल हो गये। वह अब नये रक्षामंत्री हैं।

इस बीच हिज़्बे-इस्लामी की फ़ौजें जनरल दोस्तम के सैनिकों से भिड़ गयीं और काबुल पर बराबर गोलाबारी करती रहीं। इससे यहां का सुविख्यात संग्रहालय नष्ट हो गया। इस संग्रहालय में भूतपूर्व अफ़ग़ान बादशाहों की कई कीमती चीज़ें थीं। इसके अलावा राष्ट्रपति के महल को भी क्षति पहुंची। विचार-विमर्श के बाद अंतरिम परिषद् को लगा कि वहां से जनरल दोस्तम के सैनिकों का हटना ठीक नहीं।

विरोधी गुटों को बातचीत के लिए रज़ामंद करने की दिशा में जलालुद्दीन हक्कानी के नेतृत्व वाला एक मध्यस्थता आयोग आपनी कोशिशें बराबर जारी रखे हुए था। इधर अंतरिम परिषद् के सदस्य, जिनमें वरिष्ट मुजाहिदीन कमांडर शामिल थे, हिकमतयार से व्यक्तिगत रूप से बातचीत करते रहे। लेकिन मसूद से उनकी बैठक किसी-न-किसी कारण टलती रही। आख़िर २५ मई को यह बैठक हुई और विरोधी नेता इस बात के लिए राज़ी हो गये कि उन्हें अपने पुराने मतभेद भुलाने होंगे ताकि यह इस्लामी अंतरिम सरकार कमज़ोर न पड़ जाये। अभी इस सरकार को बने एक महीना ही तो हुआ है। उन्होंने यह भी कसम खायी कि वे आपसी लड़ाई बंद कर देंगे।

जो दूसरे फैसले किये गये, उनमें दो ये थे कि अगले छः महीनों में राष्ट्रीय स्तर पर चुनाव होंगे और राजधानी काबुल से जनरल दोस्तम के सभी सैनिक हटा लिये जायेंगे।

हिकमतयार ने अभी हर प्रकार की पेशकश को नामंजूर कर दिया है। उनका यही कहना है कि वह सरकार में तभी शामिल होंगे जब काबुल में जनरल दोस्तम के सैनिक नहीं होंगे। लेकिन जब तक चुनाव नहीं होते, तब तक अंतरिम सरकार के बचे रहने के लिए इन सैनिकों की मौजूदगी वहां ज़रूरी समझी जाती है।

अनूठा विवाह

स्वर्णपुरी नाम के राज्य में धर्मवर्धन नाम के राजा का शासन था। उसकी एक ही बेटी थी जो बेहद रूपवती थी। उसका नाम स्वर्णमुखी था। स्वर्णमुखी अपने मां-बाप की इकलौती संतान थी।

उधर कौंडिन्यपुरी राज्य में सर्पदंष्ट्र नाम के राजा का राज था। वह अधेड़ उम्र का था। उसने एक दूत के माध्यम से धर्मवर्धन को अपने मन की इच्छा जतला दी।

कौंडिन्यपुरी स्वर्णपुरी की अपेक्षा काफ़ी बड़ा राज्य था। वैसे भी सर्पदंष्ट्र धर्मवर्धन की तुलना में काफ़ी बलशाली माना जाता था। फिर भी धर्मवर्धन को यह स्वीकार नहीं था कि उसकी बेटी एक अधेड़ उम्र के राजा की दूसरी पत्नी बने। इसलिए उसने कहला भेजा कि उसे यह रिश्ता स्वीकार नहीं।

सर्पदंष्ट्र तो सर्पदंष्ट्र ही था। उसमें अहंकार और दुष्टता कूट-कूट कर भरे हुए थे। धर्मवर्धन का यह उत्तर उसे बड़ा अपमानजनक लगा। उसने तुरंत अपनी सेनाओं को एकत्रित किया और स्वर्णपुरी पर चढ़ाई कर दी। धर्मवर्धन की पराजय तो निश्चित ही थी। सर्पदंष्ट्र ने राजा और रानी दोनों को जेल में ठूंस दिया।

स्वर्णमुखी के पास आकर सर्पदंष्ट्र बोला, "तुम्हारा अद्वितीय सौंदर्य मेरे मन पर छाया हुआ है। मैं तुमसे हर हालत में शादी करूंगा। अगर तुम्हारी रज़ामंदी न रहे तो मैं तुमसे जबरन शादी करूंगा।"

सर्पदंष्ट्र की इस धमकी से स्वर्णमुखी बेहद गुस्से में आ गयी। वह बोली, "एक बात याद रखो, कली को जबरन खिलाया नहीं जा सकता। तुम महामूर्ख हो। मैं तुमसे शादी कभी नहीं करूंगी। ज़रूरत पड़ी तो किसी राक्षस से कर लूंगी, लेकिन तुमसे कभी

श्रीलेखा सिन्हा

नहीं करूंगी ।"

स्वर्णमुखी का उत्तर सुनकर सर्पदंष्ट्र आगबबूला हो गया। उसने बड़ी कड़ी आवाज़ में स्वर्णमुखी से कहा, "मैं तुम्हें एक महीने की मोहलत दे रहा हूं। यदि तुमने अपने को समझा लिया तो ठीक, वरना मुझे सब कुछ बलपूर्वक करना होगा। और यह भी याद रखो, तुम्हारे मां-बाप को मौत की सज़ा से कम नहीं दूंगा।"

इस तहर अपना गुस्सा उगलकर सर्पदंष्ट्र वहां से चला गया। उसके जाते ही वहां एक राक्षस प्रकट हुआ। राक्षस को देखते ही स्वर्णमुखी एकाएक चौंकी। इस पर उस राक्षस ने कहा, "मेरा नाम कंचुक है। मैं अदृश्य रूप में यहां से गुज़र रहा था तो तुम्हारी बात मेरे कानों में पड़ी। तुम चाहो तो मेरे साथ विवाह कर सकती हो।"

कंचुक राक्षस की बात सुनकर स्वर्णमुखी को बड़ा आश्चर्य हुअ। वह बोली, "मैं तो यूं ही कह रही थी। तुम कैसे विश्वास कर सकते हो कि मैं वाकई तुमसे विवाह कर लूंगी? राक्षस और मानव के बीच संबंध हो ही कैसे सकता है।"

"तुम एक राजकुमारी हो। अपनी बात से मुकरना तुम्हें शोभा नहीं देता। यही तुम्हारी कुलीनता की पहचान है। इसी से कुलीनता ऊंची बनी रह सकती है।" कंचुक ने उत्तर दिया।

स्वर्णमुखी बड़ी दुविधा में पड़ गयी। एक तरफ सर्पदंष्ट्र जैसा क्रूर व्यक्ति, और दूसरी तरफ यह राक्षस। उसे कुछ सूझ नहीं रहा था। आखिर वह बोली, "ठीक है, मैं तुम्हारे साथ विवाह करूंगी, पर मेरी तीन शर्तें हैं। पहले उन्हें पूरा करना होगा?"

"शर्तें? कैसी शर्तें?" कंचुक कुछ घबराया-सा गया था।

"पहली शर्त—तुम्हें इसी क्षण से मांसभक्षण छोड़ देना होगा। दूसरी शर्त—तुम्हें अपनी हिंसा-प्रवृत्ति का भी त्याग करना होगा। तीसरी शर्त—हमारे राज्य में एक नदी बहती है। एक पहाड़ उसे एक जगह रोके हुए है, जिससे बहुत-सा पानी बेकार चला जाता है। अगर तुम उस पहाड़ को वहां से हटा दो तो हमारे देश के बहुत से भाग हरे-भरे हो जायेंगे।" स्वर्णमुखी

ने सहज होकर कहा ।

कंचुक स्वर्णमुखी की ओर ग़ौर से देखते हुए बोला, "पहाड़ को मैं अभी हटाये देता हूं । यह मेरे लिए कतई कठिन नहीं है । लेकिन तुम्हारी पहली और दूसरी शर्तें बहुत कठिन हैं । फिर भी मैं उन्हें पूरा करने की भरसक कोशिश करूंगा । तुम मेरा इंतज़ार करो ।" और यह कहकर कंचुक वहां से अदृश्य हो गया ।

अभी एक सप्ताह ही बीता था कि स्वर्णमुखी को पता चला कि नदी के पानी को रोकने वाला पहाड़ वहां से हट गया है और नदी अपने सामान्य रूप में बहने लगी है । इसके बाद कंचुक वहां स्वयं उपस्थित हुआ । लेकिन वह तो एकदम कमज़ोर और दुबला-पतला दिख रहा था । स्वर्णमुखी को ताज्जुब हुआ । उसने पूछा कि उसकी ऐसी हालत कैसे हुई । दीनता से कंचुक बोला, "तुम्हारी शर्त पूरी करने के लिए मैंन मांसभक्षण छोड़ दिया है । अब मैं कंदमूल और फल खा रहा हूं । लेकिन इससे मेरा जीवन मुझे दूभर लग रहा है ।"

स्वर्णमुखी को कंचुक की बात सुनकर बड़ा अचंभा हुआ । उसने कहा, "तुम्हारी यह निष्ठा मैं सराहे बिना नहीं रह सकती । मैं तुमसे विवाह करने को तैयार हूं ।" फिर उसने उसे सर्पदंष्ट्र राजा के बारे में बताया और कहा, "तुम पहले उस दुष्ट का अंत करो । उसने मेरे माता-पिता को कारागार में डाल रखा है ।"

कंचुक अब पशोपेश में पड़ा गया । कहने लगा, "सर्पदंष्ट्र को मारना मेरे लिए बिलकुल मुश्किल नहीं, लेकिन मैं अब तुमसे वचनबद्ध हूं । तुम्हारी दूसरी शर्त को परा करने के लिए मैंने हिंसावृत्ति छोड़ दी है । हिंसा मुझसे अब संभव नहीं होगी ।"

कंचुक का उत्तर सुनकर स्वर्णमुखी आनंद-विभोर हो उठी । ग़ज़ब । उसे पाने के लिए उसने मांस-भक्षण छोड़ा, हिंसा छोड़ी, और अब स्वर्णमुखी कंचुक के प्रति पूरी तरह आसक्त थी । वह दो-एक क्षण कुछ सोचती रही, और फिर उससे बोली, "जब तक सर्पदंष्ट्र रहेगा, वह हमारा विवाह नहीं होने देगा । उसने अधर्म से हमारा राज्य हथियाया है और मेरे माता-पिता को

कारागार में सड़ने के लिए छोड़ दिया है। वह मेरे साथ ज़बरदस्ती विवाह करना चाहता है। ऐसे दुष्ट को मारने से तुम्हारा वचन भंग नहीं होग।" स्वर्णमुखी ने उसे समझाते हुए कहा।

लेकिन कंचुक अपनी बात पर कायम रहा। कहने लगा, "दुष्ट का अंत करना बुरी बात नहीं। लेकिन उसने मेरे प्रति कोई दुर्भावना नहीं दिखायी। इसलिए उसे मैं कैसे मार सकता हूं? उसे मारकर तुमसे विवाह करना तो स्वार्थ कहलायेगा। इसलिए तुम मुझे क्षमा करो।"

कंचुक के तर्क अकाट्य थे। स्वर्णमुखी को कुछ सूझा नहीं। वह थोड़ी देर तक चुप रही, फिर बोली, "ठीक है, मुझे सोचने के लिए थोड़ा वक्त दो। एक सप्ताह बाद हम इसी जगह फिर मिलेंगे।"

एक सप्ताह यों ही बीत गया। स्वर्णमुखी एक पेड़ के नीचे बैठी इसी उधेड़बुन में थी कि अब क्या किया जाये कि वहां कंचुक एकाएक प्रकट हुआ। "राजकुमारी, तुम्हारा निर्णय क्या है? मुझे जल्दी बताओ।"

उसी समय वहां सर्पदंष्ट्र भी आ धमका। उसे राक्षस और राजकुमारी को एकसाथ बैठे देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह स्वर्णमुखी से बोला, "यह कौन है? कैसे तुम इसके साथ बैठकर इस तरह बात कर रही हो?"

सर्पदंष्ट्र के प्रश्न से स्वर्णमुखी घबरायी नहीं। बड़े सहज ढंग से बोली, "यह भी तुम्हारी तरह मेरे साथ विवाह करने का इच्छुक है। लेकिन तुम्हारी तरह ज़ोर-ज़बर से नहीं, मेरी इच्छा से।"

यह सुनते ही सर्पदंष्ट्र ने म्यान में से अपनी तलवार निकाली और उसे तानते हुए बोला, "ऐ नीच राक्षस, तुममें इतना साहस कैसे पैदा हुआ कि तुम मुझसे स्पर्धा करो? मैं अभी तुम्हें मज़ा चखाये देता हूं" और यह कहकर उसने अपनी तलवार से कंचुक पर वार किया।

इस अप्रत्याशित वार से कंचुक क्रुद्ध हो उठा। उसने एकाएक सर्पदंष्ट्र की तलवार उससे छीन ली और उसे घुमाकर दूर फेंक दिया। फिर उसने अपने दोनों हाथों से सर्पदंष्ट्र को ऊपर उठाया और उसे भी घुमाकर दूर फेंक दिया। सर्पदंष्ट्र का नीचे

गिरना था कि उसने अपने प्राण त्याग दिये । उसके मुंह से बुरी तरह खून बह रहा था ।

जैसे ही सर्पदंष्ट्र के मरने की खबर चारों ओर फैली, वैसे ही कौंडिन्यपुरी की सेनाएं वहां से डरकर भग खड़ी हुईं ।

स्वर्णपुरी के राजा और रानी अब रिहा हो चुके थे । पर जब उन्हें पता चला कि उनकी बेटी एक राक्षस से विवाह करना चाहती है तो वे परेशान हो उठे । तब स्वर्णमुखी ने उन्हें समझाया कि असली राक्षस तो सर्पदंष्ट्र था, और राक्षस के रूप में कंचुक एक श्रेष्ठ मानव है ।

आखिर राजा धर्मवर्धन और उसकी पत्नी को इस विवाह के लिए अपनी स्वीकृति देनी पड़ी । शुभ मुहूर्त देखकर कंचुक का स्वर्णमुखी से विवाह हो गया ।

पर विवाह की रस्म पूरी करने के लिए जैसे ही स्वर्णमुखी ने कंचुक के गले में जयमाला डाली, कंचुक का राक्षसी रूप खत्म हो गया और वह एक सुंदर राजकुमार बनकर दिखने लगा ।

इस अद्‌भुत दृश्य पर हर कोई अचंभे में पड़ गया । तब राजकुमार बोला, "मैं वत्सल का युवराज विक्रमसिंह हूं । गुरुकुल से लौट रहा था तो एक देवकन्या ने मेरे साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की । मैंने उसका प्रस्ताव ठुकरा दिया, जिस पर उसने मुझे श्राप दिया और मैं राक्षस बन गया । फिर दया करके उस देवकन्या ने, मेरी प्रार्थना पर, शापांत के बारे में बताया कि जब कोई राजकुमारी अपनी इच्छा से मेरे साथ विवाह करेगी तो मेरा असली रूप मुझे वापस मिल जायेगा ।"

राजकुमार की गाथा सुनकर राजा-रानी तथा स्वर्णपुरी की समूची जनता खुशी से झूम उठी । विवाह के बाद विक्रम स्वर्णमुखी को अपने साथ अपने देश, वतसल, ले गया ।

वत्सल में उसने अपने माता-पिता को शुरू से आखिरी तक सब कुछ बताया । वे भी बहुत खुश हुए ।

अब राजकुमार विक्रम दो देशों का राजा था । वत्सल और स्वर्णपुरी, दोनों देशों के लोग, उसके शासन में बहुत ही खुश थे ।

तर्कसंगत निर्णय

हेमंतपुर राज्य के कोषाध्यक्ष, वीरभद्र, के बारे में वहां के राजा को अनेक शिकायतें मिलीं कि वह झूठमूठ का हिसाब करके खज़ाने को खाली करता जा रहा है। एक दिन राजा ने वीरभद्र को बुलवा भेजा। लोगों ने सोचा कि वीरभद्र की अब छुट्टी हुई समझो। लेकिन राजा ने उसे चेतावनी भर दी और छोड़ दिया। राजा ने उससे केवल इतना कहा कि भविष्य में हिसाब में कोई गड़बड़ी दिखाई दी तो उसे माफ नहीं किया जायेगा।

सब का तो यही ख़्याल था कि राजा भ्रष्ट व्यक्तियों के प्रति ज़रा भी नरमी नहीं दिखाता। इसलिए उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वीरभद्र को उसने कैसे जाने दिया। महारानी के मन में भी यही संदेह उठा और वह उन्हें राजा के सामने रखने में ज़रा भी नहीं सकुचायी।

रानी की बात सुनकर राजा को हंसी आ गयी। बोला, "वीरभद्र ने अपनी दो बेटियों की शादी की है। दोनों ही बेटियां देखने में बहुत साधारण हैं। इसके अलावा उसने रहने के लिए एक अच्छा-सा घर भी बनवा लिया है। अब उसकी उम्र भी काफ़ी हो गयी है। उसे और कहीं तो नौकरी मिलने से रही! इसलिए, मैंने जानबूझकर सब कुछ अनदेखा किया, हालांकि मैं जानता था कि वह हिसाब में गड़बडी कर रहा है। लेकिन अब उसके काम हो गये हैं। अब वह खज़ाने की रकम हड़पने की हिम्मत नहीं जुटा पायेगा। फ़र्ज़ करो मैं ऐसी हालत में किसी नये व्यक्ति को कोषाध्यक्ष बना भी लेता हूं—वह भी वही कहानी दोहरायेगा। मैंने वीरभद्र को नौकरी पर बरकरार रखकर उस कहानी की पुनरावृत्ति को रोक दिया है। अब तुम ही बताओ, रानी, मैंने ठीक किया है या ग़लत?"

राजा की बात सुनकर रानी के होंठों से भी हंसी फूट पड़ी। उसे राजा का निर्णय बड़ा तर्कसंगत लगा।

—शारदा अग्रवाल
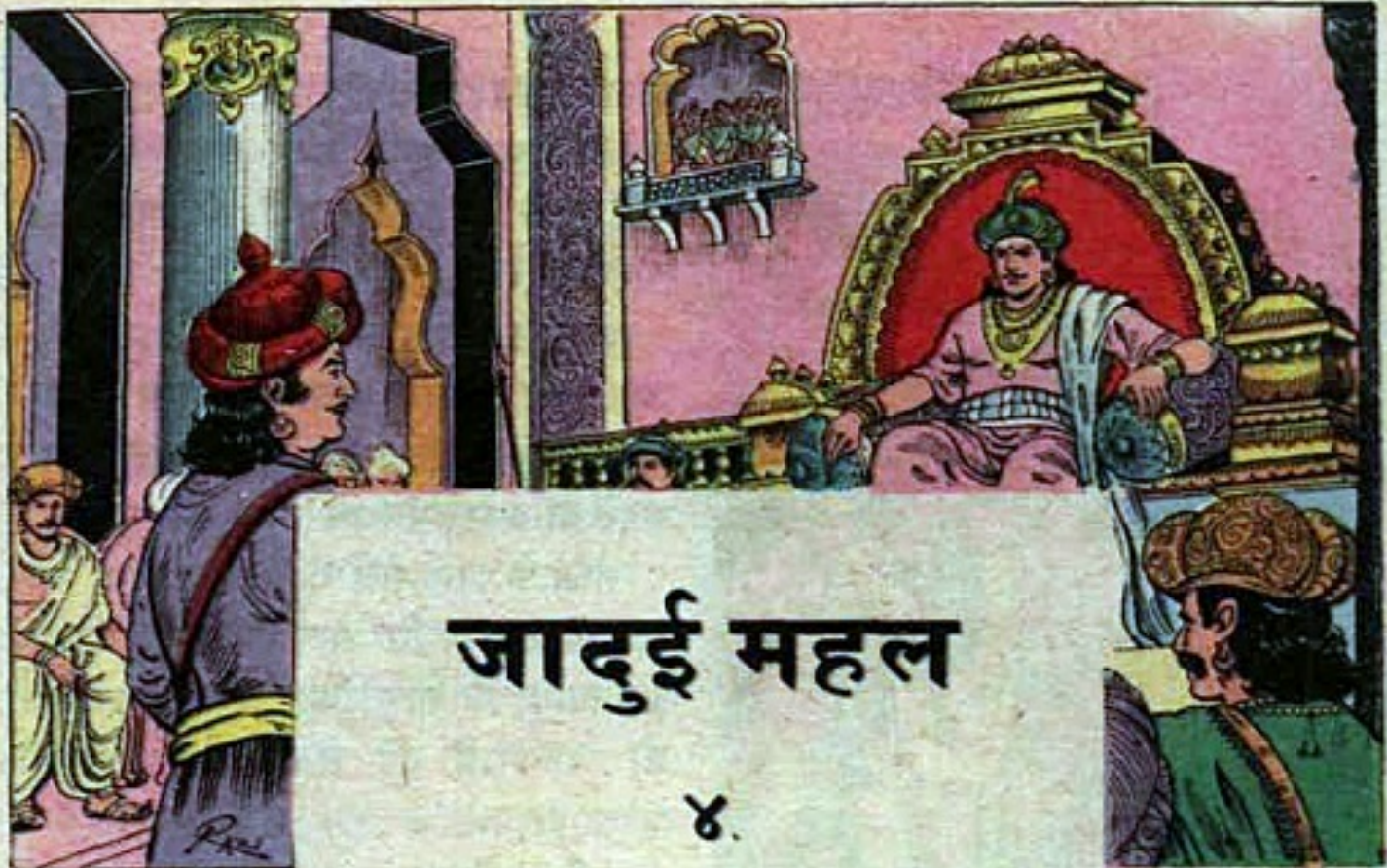
जादुई महल

४.

[राजज्योतिषी के कहे अनुसार राजा वीरसेन और रानी वज्रेश्वरी तीसरी बार सारस सरोवर वाले विश्राम महल में पहुंचे। वहां से राजकुमारी विद्यावती ग़ायब थी और सारा महल और सभी उद्यान छान मारे गये, लेकिन विद्यावती का कहीं कोई सुराग़ नहीं मिला। राजा-रानी और सेनाध्यक्ष वापस मुख्य महल में आ गये और वे यह सोच रहे थे कि उन्हें आगे की कार्यवाही क्या करनी है। उससे आगे—]

महल में पहुंचकर राजा वीरसेन ने अपने सभी दरबारियों को बुलवाया और सारस सरोवर वाले महल से राजकुमारी विद्यावती के ग़ायब हो जाने का दुखद समाचार दिया।

राजा ने अपने मंत्रियों, सलाहकारों और सेनाध्यक्ष के साथ बहुत देर तक विचार-विमर्श किया। अब प्रश्न सब के सामने यह था कि राजकुमारी का पता लगाया कैसे जाये और कैसे उसे बचाया जाये। कुछ सलाहकारों ने यह भी कहा कि उस विश्राम महल को ऐसे ही पूरे संरक्षण के बिना छोड़ देना ठीक नहीं था, विशेषकर तब जब कि राजकुमारी वहां रह रही थी। उन्हें इस बात पर भी ताज्जुब था, राज ज्योतिषी कैसे यही रट लगाये रहा कि राजकुमारी की सेवा में केवल कमला जैसी बूढ़ी दासी को रखा जाये।

राजा बड़े असमंजस में था। क्या राज-ज्योतिषी की नीयत पर शक किया जा रहा है? "आचार्य वाचस्पति ने विद्यावती की जन्म कुंडली को बड़ी बारीकी सी देखा था," राजा ने स्पष्टीकरण देते हुए कहा। "उसे ग्रहों की चाल में कुछ खोट नज़र आया होगा, वरना उसने राजकुमारी की रहने की जगह में परिवर्तन का सुझाव न दिया होता। पिछली दो बार जब हम वहां गये थे, रानी और मुझे लगा था कि उसमें काफी पिरवर्तन आ रहा है और वह परिवर्तन अच्छे के लिए ही है। दरअसल, ज्योतिषी तो हमें कल ही मिला था। उसने हमसे कहा था कि हम आज सुबह-सुबह ही उससे फिर मिल लें। यह सलाह केवल वाचस्पति की ही नहीं थी, उसके साथ जगतपति भी था। मुझे इन आचार्यों पर किसी प्रकार का कोई संदेह नहीं। वे तो राजकुमारी की भलाई ही चाहते हैं।"

वहां पर पूरी तरह चुप्पी छायी हुई थी। उस चुप्पी को एक आवाज़ ने तोड़ा। "यह आचार्य जगतपति कौन है, राजन्?" प्रश्न करने वाला उग्रसेन था।

राजा ने उसे सब कुछ बता दिया और यह भी बताया कि राज ज्योतिषी, आचार्य जगतपति, के साथ किस तरह राजकुमारी की जन्मपत्री को लेकर वह बातचीत करता रहा।

आखिर फैसला यह हुआ कि बजाय इसके कि लोग राजकुमारी के ग़ायब हो जाने के बारे में इधर-उधर से सुनें, एक औपचारिक घोषणा कर दी जानी चाहिए जिसमें लोगों से अनुरोध किया जाये कि वे शांत रहें, लेकिन साथ-साथ उनसे यह भी कहा जाये कि वे चौकस रहें और इस बात का खास ध्यान रखें कि राज्य में कौन अजनबी है और उसकी गतिविधि क्या है।

लोगों को जब पता चला कि राजकुमारी विद्यावती बड़े रहस्यमय ढंग से ग़ायब हो गयी है तो उन्हें अपने कानों पर यक़ीन नहीं हुआ। "क्या कोई इस राज्य में इतना नीच भी हो सकता है कि वह हमारी दुलारी राजकुमारी को उड़ा ले जाये?" एक बूढ़े दंपति ने पूछा।

"मुझे तो ताज्जुब इस बात पर हो रहा

है कि कैसे कोई आधी रात के समय सारस सरोवर वाले महल में पहुंचा होगा और कैसे राजकुमारी को अपने साथ लिवा ले गया होगा?" एक युवक ने अपनी बात पर ज़ोर देते हुए कहा, "मैं अभी तुरंत राजकुमारी की खोज में निकल रहा हूं। मुझे पहाड़ की एक-एक गुफा के बारे में ज्ञान है।"

आचार्य वाचस्पति को जैसे ही इस खबर के बारे में पता चला, वह महल की ओर लपका। "यह मैं क्या सुन रहा हूं, अन्नदाता।" ज्योतिषी ने चिंतातुर स्वर में कहा।

"जो हो गया, सो हो गया, ज्योतिषीजी।" राजा वीरसेन बोला, "लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि राजकुमारी को किसी प्रकार की हानि न पहुंचे। दूसरे, हमें यह भी पता लगाना होगा कि उसे कहां ले जाया गया है।"

"विद्यावती एक फूल के समान है। मेरी इतनी प्यारी बेटी को कोई क्यों नुकसान पहुंचाना चाहेगा?" रानी अब लगभग प्रलाप कर रही थी।

आचार्य वाचस्पति के पास वे शब्द नहीं थे जिनसे वह राजसी दंपति को सांत्वना देता। आखिर, किसी तरह बोला, "मुझे वापस जाने की इजाज़त दीजिए। मैं उसकी जन्मकुंडली एक बार फिर ग़ौर से देखूंगा। हम कम से कम यह तो पता लगा ही सकते हैं कि वह किस दिशा में है। वह जहां भी है, सकुशल है। यह ऐसे ही है अन्नदाता, जैसे चंद्रमा या सूर्य, जो ग्रहण लगने के बाद फिर अपने पूरे वैभव में प्रकट होते हैं।"

राज ज्योतिषी राजा और रानी से आज्ञा लेकर जल्दी से अपने घर पहुंचा। उसे आचार्य जगतपति का ज़बरदस्त इंतज़ार था। वह राजकुमारी के इस तरह अचानक ग़ायब हो जाने के बारे में उसके विचार जानना चहता था। लेकिन आचार्य उस दिन नहीं आया। वह अगले दिन भी नहीं आया।

आचार्य वाचस्पति को यह कुछ अजीब लगा। राजकुमारी के बारे में ख़बर फैले तीन दिन हो गये थे और जगतपति का कहीं कोई पता नहीं था। वह कहां जा सकता है? वाचस्पति को अचंभा हो रहा था।

उसे उन सब बातों की याद हो आयी

जो आचार्य बृहस्पति और जगतपति तथा उसके अपने बीच हुई थी।

जगतपति भी किसी राजपरिवार से था। उसके दादा, कैलाशपति, को हिमगिरि के सिंहासन पर बैठना चाहिए था, क्योंकि उसके बड़े भाई त्रिलोकपति के कोई संतान नहीं थी, और उसने अपने छोटे भाई का लालनपालन अपना बेटा समझकर ही किया था। लेकिन इधर जैसे ही राजा का देहांत हुआ, वैसे ही उसके भांजे, उमापति, ने सारी सत्ता संभाल ली और कैलाशपति को देश से भागने पर मजबूर कर दिया। भाग्य ने जब इस तरह पलटा खाया तो कैलाशपति की ज्योतिष विद्या में रुचि जगी। उसने दूर-दूर तक यात्राएं कीं, विद्वानों से भेंट की और उनके साथ विचार-विमर्श किया। उसकी और भी कई नामी ज्योतिषाचार्यों से भेंट हुई और उनकी मदद से उसने ज्योतिष विद्या का और गहन अध्ययन किया। उसके पुत्र गजपति में भी यह रुचि पनपी। गजपति के बाद उसके पुत्र जगतपति ने भी ज्योतिष विद्या को अंगीकार किया, लेकिन उसके साथ-साथ तंत्र-मंत्र और जादू-टोने में भी थोड़ी-बहुत महारत हासिल कर ली। इस जादू-टोने के बारे में उसने कुछ तो ग्रंथ पढ़े थे और कुछ उसने आदिवासियों से अपने भ्रमण के दौरान सीखा था।

दरअसल, जगतपति ने अपने को ज्योतिष और जादू तक ही सीमित नहीं रखा था। उसने राज्य-संचालन के मूलभूत सिद्धांतों को भी समझा। उसे उम्मीद थी, एक-न-एक दिन वह राजा ज़रूर बनेगा।

अब एक मौका उसके हाथ लगा था। वीरगिरि के राजा वीरसेन की एकमात्र संतान राजकुमारी, विद्यावती सारस सरोवर वाले विश्राम महल में बिना पर्याप्त संरक्षण के रह रही थी। आचार्य वाचस्पति ने तो यह भविष्यवाणी की थी कि जब उसका कुसमय खत्म हो जायेगा तो उसका विवाह भी हो सकता है। जगतपति जानता था कि उसे समय का इंतज़ार करना होगा। लेकिन स्थिति ऐसी थी कि उसे ज़्यादा तेज़ी से अपनी चाल चलनी थी।

दरअसल, जगतपति को तो जादू-टोने के लिए गोपनीयता और एकांत चाहिए था जिस
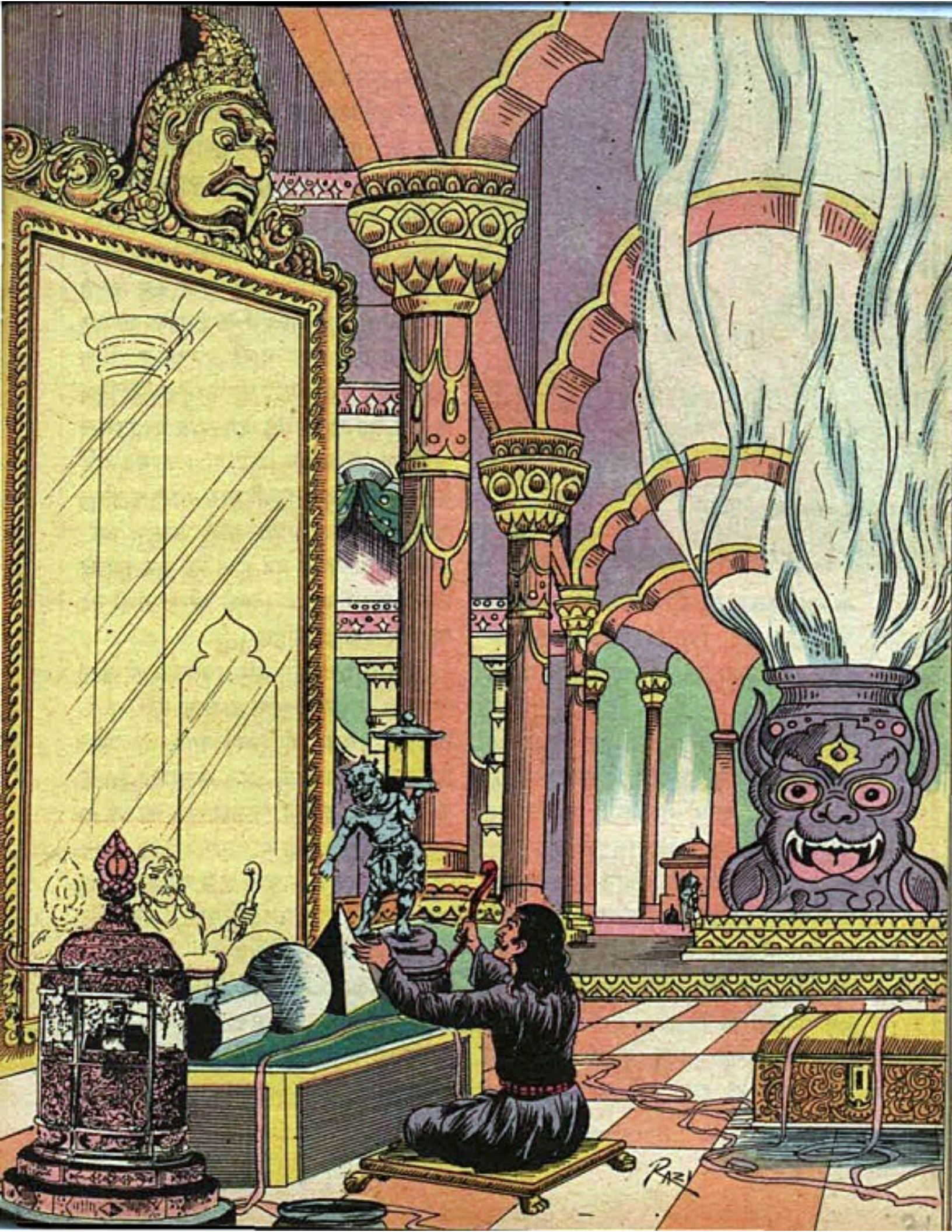
के लिए एक पहाड़ की ढलान पर महलनुमा घर खड़ा था। हिमगिरि से निकाले जाने पर उसके दादा और पिता ने यहीं शरण ली थी।

जैसे ही उसे पता चला कि राजकुमारी सारस सरोवर वाले महल में चली गयी है, उसने पहला काम यह किया था कि उस सरोवर तथा उसके किनारों की पूरी तरह से जांच करवायी थी। उसे उस सरोवर से बाहर निकलने के लिए एक रास्ते की तलाश थी, और मेहनत करके उसने वह भी ढूंढ़ लिया था। फिर उसने एक नाव की व्यवस्था भी की।

अपने जंगल वाले महल में उसने राजकुमारी के रहने की व्यवस्था की। लेकिन उसने इस बात का ख़ास ख़याल रखा कि गोपनीयता ज़्यादा से ज़्यादा बनी रहे और जब ग्रहों का प्रभाव राजकुमारी पर से टल जाये तो उसे अपने मां-बाप को लौटा दिया जाये। वह उनकी कृतज्ञता प्राप्त करेगा, बल्कि शादी में उसका हाथ भी मांगेगा।

जगतपति आचार्य कई दिनों तक उससे नहीं मिला था, आचार्य वाचस्पति को यह बड़ा अजीब लगा था। बहरहाल, जिस समय वह राजकुमारी की जन्मकुंडली फिर से देख रहा था, उसने जगतपति का विचार अपने मन से निकाल दिया था। जन्मकुंडली देखते-देखते जब वह हिसाब-किताब करने लगा तो वह एकाएक बोल उठा, "अरे, इसका मतलब तो यह हुआ कि राजकुमारी बिलकुल सुरक्षित है। मुझे फौरन राजा को यह सूचना देनी चाहिए।"

आचार्य वाचस्पति अब राजमहल की ओर लपका। राजा वीरसेन अकेला नहीं था। सेनापति उग्रसेन भी उसके साथ था, और उसने राजकुमारी की खोज करने की दिशा में जो प्रयास किये थे, उनका रोज़ का ब्योरा दे रहा था। फिर भी आचार्य को तुरंत भीतर ले जाया गया। आचार्य कुछ कहने ही जा रहा था कि राजा ने छूटते ही पूछा, "ज्योतिषी जी, क्या मेरी बेटी जीवित है?"

"अन्नदाता, मैं आपके लिए यही अच्छी खबर लाया हूं।" आचार्य ने कहा, और इसके साथ ही उसने राजकुमारी की जन्मकुंडली उसके सामने फैला दी। "मैं

इसे बड़े ध्यान से देखता रहा हूं। मेरा हिसाब-किताब यह कहता है कि अगले तीस-चालीस दिनों तक बृहस्पति अन्य ग्रहों के साथ नहीं मिलेगा, जिससे सूर्य के उच्च होने में कोई रुकावट नहीं आयेगी। राजकुमारी जीवित है और वह हर तरह से ठीक-ठाक है, इतना विश्वास मैं आपको दिला सकता हूं। वह अपनी मर्ज़ी से विश्राम महल से नहीं गयी। इस बात के संकेत स्पष्ट हैं। उसे किन्हीं बाहरी शक्तियों ने मजबूर किया था, और ये शक्तियां पश्चिमी दिशा से आयी थीं। मेरी राय में आपको इस दिशा में पूरी तरह खोज करवानी चाहिए। वहां जाने के लिए बढ़िया तो यह रहेगा कि आप दक्षिण की ओर से शुरू करें।"

"लेकिन पश्चिमी दिशा में तो केवल सप्तगिरि पर्वत की श्रेणी है, और चारों तरफ घने जंगल हैं?" उग्रसेन ने कहा। "मेरे सैनिकों ने पहले ही दूर-दूर तक जंगलों को छान मारा है। उन्हें ऐसा कोई रास्ता नहीं मिला जिससे राजकुमारी या उसके अपहरणकर्ता गये हों। बहरहाल, कुछ और सैनिक उत्तरी दिशा से गये हैं और वे अभी तक लौटे नहीं हैं।"

"ठीक है, उन्हें लौटने दो," राजा ने कहा, "और तब हम यह निर्णय लेंगे कि हम दक्षिणी दिशा से कितने सैनिक भेजें, क्योंकि वाचस्पति ने तो अब उसी दिशा से खोज करने की सलाह दी है। लेकिन उग्रसेन, तुम कह रहे थे कि एक नौजवान विद्यावती की खेज में जाने के लिए हमारी इजाज़त चाहता है। वह दरअसल, चाहता क्या है? क्या उसे कुछ सैनिक चाहिए जो उसके साथ जा सकें?"
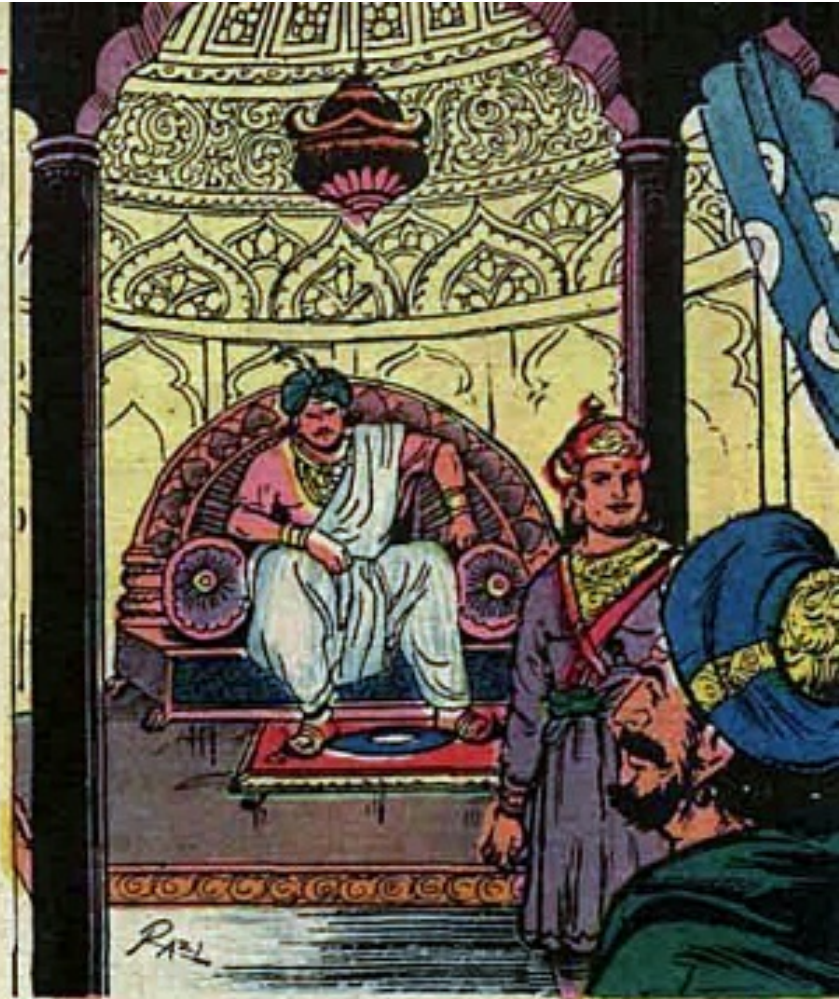
"नहीं, राजन्," उग्रसेन ने कहा, "वह किसी प्रकार की कोई सहायता नहीं चाहता। वह केवल एक विचित्र प्रकार का अनुरोध लेकर आया है। उसका कहना यह है कि यदि इस खोज में उसकी जान चली जाये तो उसकी बूढ़ी मां की देखरेख का ज़िम्मा हमें अपने ऊपर लेना होगा, क्योंकि तब वह अकेली रह जायेगी। लेकिन मुझे लग रहा है कि वह किसी साधारण परिवार से नहीं है। उसकी शक्ल-सूरत, उसकी चाल-ढाल, उस सब से यही संकेत मिलता है कि वह

किसी उच्च परिवार से है या किसी राज-घराने से ताल्लुक रखता है। या हो सकता है बहुत पहले रहा हो। वह काफी होशियार, मज़बूत और बहादुर दिखाई देता है। मेरा ख्याल है उसे एक मौका मिलना चाहिए। हो सकता है उसे कामयाबी मिल जाये।"

"तुम कह रहे थे कि वह महल के द्वार पर इंतज़ार कर रहा है?" राजा ने पूछा। "बुलवाओ उसे। पहले मैं देख तो लूं। उसके अनुरोध पर बाद में फैसला करूंगा।"

उग्रसेन ने महल के एक दास को बुलाया और उसे उस नौजवान को भीतर लिवा लाने को कहा। फिर वह आचार्य वाचस्पति की ओर मुड़ा और बोला, "क्या आपकी इधर आचार्य से भेंट हुई है?"

सेनापति के अचानक ऐसा प्रश्न करने से आचार्य को बड़ी हैरानी हुई। "नहीं।" उसने बिना ज़्यादा सोचे-विचारे उत्तर दिया। "वह लगभग पिछले तीन-चार दिनों से मेरे यहां नहीं आया। और यह मुझे बड़ा अटपटा लग रहा है। संभवतया उसे कहीं ज्योतिष के लिए बुला लिया गया है। क्यों? क्या आप उससे मिलना चाहेंगे? अगली बार जब वह आयेगा तो मैं उससे कहूंगा कि वह आपसे मिले।"

"राजन् मुझे बता रहे थे कि वह आपके साथ यहां आया था," उग्रसेन ने अपनी बात स्पष्ट की, "मैं केवल यही जानना चाहता था कि क्या वह आपसे फिर मिला और क्या उसने राजकुमारी के बारे में किसी प्रकार का कोई संकेत दिया?"

राज ज्योतिषी राजा की आज्ञा के लिए खड़ा हुआ ही था कि महल के कर्मचारी ने उस नौजवान को राजा के सामने पेश किया। आचार्य वाचस्पति की आंखें उस नौजवान पर से हटती ही न थीं। कितना खूबसूरत है यह। यह कौन हो सकता है जो अकेले ही राजकुमारी की खोज में निकलना चाहता है? जिस समय आचार्य महल से बाहर जा रहा था, उस समय यह विचार उसे घेरे हुए था। (जारी)

वीणाधरी का निर्णय

अपनी धुन का पक्का राजा विक्रम पहले की तरह पेड़ की ओर बढ़ा, पेड़ से लटकती लाश को उतार कर उसने अपने कंधे पर डाला और फिर मौन साधे श्मशान को पार करने लगा । तब लाश में मौजूद बैताल बोला, "राजन्, इस वक्त आधी रात को आपका इस तरह श्रम करना मेरी समझ में नहीं आ रहा । हो सकता है आप किसी कार्य को साधना चाह रहे हों । अनुभवी लोगों का कहना है कि कोई भी काम अपने बूते से बढ़कर नहीं करना चाहिए । यह एक चिर सत्य है । इस सत्य को रेखांकित करने वाली मैं आपको वीणाधरी की कहानी सुनाता हूं । इसे ध्यान से सुनिए । इसमे आपका रास्ता भी कटेगा और आपको थकान भी महसूस नहीं होगी" और फिर बैताल वह नी कहानी इस प्रकार सुनाने लगा—

चंद्रकांत राज्य में रामदेव नाम का एक ग़रीब क़िसान रहता था । रामदेव की पत्नी

बैताल कथा

का नाम कामाक्षी था। उनके एक बेटी थी जो बड़ी सुंदर थी। रामदेव ने अपनी बेटी का नाम वीणाधरी रखा था। सब उसे वीणा नाम से बुलाते थे।

वीणा दिन-ब-दिन बड़ी होती गयी। उसके साथ-साथ उसका सौंदर्य भी बढ़ता गया। हर कोई उसके सौंदर्य पर आश्चर्य करता। लोग-बाग अक्सर कहते, "वीणा को किसी राजमहल में होना चाहिए था!"

होते-होते ये सब बातें वीणा के कानों में भी पड़ने लगीं। उसके मन में अब यह बैठ गया कि वह किसी राजकुमार के लिए ही बनी है, साधारण व्यक्ति उसका पति नहीं हो सकता।

उधर रामदेव का एक मित्र चंद्रकिशोर था। चंद्रकिशोर के मन में यह इच्छा जगी कि वीणा उनके यहां बहू बनकर आये। उसके एक बेटा था जिसका नाम शिवकुमार था। चंद्रकिशोर अपने इसी बेटे के लिए वीणा का हाथ चाहता था। वह अक्सर रामदेव से कहता, "तुम्हारी बेटी वीणा अगर बहू बनेगी तो मेरी ही। यह बात तुम गिरह बांध लो।"

वीणा और शिवकुमार, दोनों, अब वयस्क हो गये थे। एक दिन शिवकुमर ने वीणा से कहा, "वीणा, तुम मेरे प्राणों की प्राण हो। अगर तुम भी मुझे इतना ही चाहती हो तो हमें तुरंत विवाह कर लेना चाहिए।"

शिवकुमार के प्रस्ताव पर वीणा ने एकदम पलटकर कहा, "तुमने यह कैसे सोच लिया? मेरे मन में तो तुम्हें विवाह करने का विचार कभी आया ही नहीं!"

वीणा की बात सुनकर शिवकुमार के मन को ठेस लगी। उसने धीरे से कहा, "अगर ऐसी बात है तो जाने दो। हां, एक बात मैं ज़रूर कहूंगा-विवाह करूंगा तो केवल तुम्हीं से, वरना विवाह के बिना ही समूचा जीवन बिता दूंगा।"

पर वीणा पर इसका कोई असर नहीं हुआ। वह चुप रही। उसके सपने तो दूसरे थे। वह तो किसी राजकुमार को अपना जीवनसाथी बनाना चाहती थी। पर एक बात वह बहुत अच्छी तरह जानती थी कि राजकुमार को पाने के लिए उसकी सुंदरता

ही काफी नहीं है, उसका पहनाव, उसका आचार-व्यवहार और उसकी भाषा का संस्कार भी ज़रूरी है और यह सब बिना अनुभव के संभव नहीं। इसलिए वीणा अब अनुभव की खोज में थी। आखिर उसे एक रास्ता सूझा। वह रास्ता था किसी तरह रानी की परिचारिका बनना।

वीणा की एक मित्र थी दीपिका। वह कुछ समय से रानी चंद्रावती की परिचारिका थी। उसने वह दीपिका की सहायता ली और रानी की परिचारिका के रूप में नियुक्ति पा गयी।

एक दिन रानी के यहां एक चित्रकार आया। वह अपने साथ एक चित्र लाया था। उसने कहा, "महारानी, मैंने एक चित्र तैयार किया है जिसे मैं आपको भेंट करने लाया।"

चित्रकार वह चित्र रानी की ओर बढ़ा ही रहा था कि वीणा एकाएक उठी और उसे वह चित्र चित्रकार से लेकर रानी के सामने प्रस्तुत कर दिया। चित्र में सूर्यास्त का दृश्य था जो बहुत ही प्रभावशाली था। रंगों का मिश्रण बड़ी सझबूझ के साथ किया गया था। रानी उस चित्र पर मुग्ध-सी हो गयी और उसने चित्रकार को तुरंत एक हज़ार मोहरें पुरस्कार स्वरूप दे दीं।

वीणा यह सब बड़े ध्यान से देख रही थी। रानी ने उससे पूछ ही लिया, "तुम्हें यह चित्र कैसा लगा?"

वीणा ने बिना किसी लाग-लपेट के कहा, "यह तो वही सूरज है जिसे हम हर रोज़ देखते हैं। इसमें विशिष्टता क्या है? खैर, अब आपने इसे एक हज़ार मोहरें देने का निर्णय ले ही लिया है तो मेरे टीका-टिप्पणी करने से क्या फायदा? अब टीका-टिप्पणी करने का मुझे कोई अधिकार भी नहीं। लेकिन यह चित्र इस पुरस्कार के योग्य नहीं था।"

रानी वीणा की बात पर हंस पड़ी। कहने लगी, "वीणा, ईश्वर ने तुम्हें सुंदर रूप तो दिया, लेकिन सौंदर्य की परख वाला हृदय नहीं दिया। एक बात और याद रखो-हम किसी को जो भी पुरस्कार देंगे, अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप ही देंगे।"

वीणा के पास अब कोई उत्तर नहीं था। वह एकदम चुप रही।

एक दिन राजा और रानी अंतःपुर में बैठे कुछ बातें कर रहे थे । वहां वीणा भी थी । वह उन्हें चंवर डुलाकर हवा कर रही थी । इतने में एक गुप्तचर आया और बोला, "महाराज, वैदेही का राजा शक्तिसिंह हम पर आक्रमण करने वाला है । उसकी सेनाएं तैयार-बर-तैयार हैं । वे किसी भी क्षण हम पर टूट पड़ सकती हैं ।" और यह कहकर वह गुप्तचार वहां से चला गया ।

आक्रमण के बारे में सुनकर वीणा मारे भय के बुरी तरह कांपने लगी, और फिर अचेत हो गयी । उसका चंवर डुलाना बीच में ही रह गया । रानी किसी गहरी सोच में पड़ गयी ।

अब राजा को रानी से कहना ही पड़ा, "बेशक, शक्तिसिंह हम पर हमला कर सकता है । लेकिन वह हमला अचानक नहीं होगा । रास्ते में स्वर्णमुखी नदी पड़ती है । उसकी सेनाओं को वह नदी पार करनी होगी । हमारी सेनाएं वहां पूरी तरह से सावधान हैं ।" फिर उसने वीणा की ओर देखा और कहा, "अंतःपुर की परिचारिकाएं ही यदि इस प्रकार भयभीत हो जायें तो सामान्य जनका का क्या होगा? अंतःपुर की परिचारिका के लिए साहस और धैर्य बहुत आवश्यक है ।"

एक दिन रानी चंद्रावती वन-विहार के लिए निकली । उसकी सभी प्रमुख परिचारिकाएं उसके साथ थीं । लेकिन वीणा सरदर्द का बहाना बनाकर महल में ही रह गयी । दरअसल, काफी समय से वह यह ठाने हुए थी कि वह एक दिन रानी के वस्त्र और आभूषण पहनकर अपना रूप आइनें में निहारेगी । इसलिए जैसे ही रानी वन-विहार के लिए रवाना हुई, वैसे ही वीणा ने उसके बहूमूल्य वस्त्र धारण कर लिये और अपने को आभूषणों से सजा लिया । फिर वह आइने के सामने खड़ी हो गयी और अपने रूप-सौंदर्य पर गद्‌गद होती रही ।

उसी समय अंतःपर में एक युवक दाखिल हुआ । वीणा उसे देखकर अचकचाकर रह गयी । युवक ने वीणा के रूप के प्रति अपने को एकाएक बंधा पाया । वह उससे बोला, "सुंदरी, तुम कौन हो?"

साधारण वेशभूषा में आये उस युवक को

वीणा ने खिझाने की सोची । कहने लगी, "मैं विशालपुर की युवरानी हूं । इस देश की महारानी का निमंत्रण पाकर मैं यहां अतिथि के रूप में आयी हूं ।"

इस पर वह युवक बोला, "मैं इस देश का युवराज हूं । मेरा नाम विजयदीप है । मैं एक गुरूकुल में विद्याग्रहण कर रहा था । उसे पूरा करके अभी वहां से लौट रहा हूं । तुम्हारे सौंदर्य ने तो मुझे तुम्हारा दास बना दिया है । अगर तुम्हें आपत्ति न हो तो मैं चाहूंगा कि बड़ों की अनुमति लेकर मैं तुमसे विवाह-बंधन में बंध जाऊं ।"

युवराज विजयदीप का प्रस्ताव सुनकर वीणा चौंक गयी । उसने तब उसे एक साधारण व्यक्ति मानकर उसके साथ परिहास किया था । उसे फौरन अपनी ग़लती का अहसास हो आया । वह उसके पांव पर गिर पड़ी और उससे क्षमा मांगने लगी, "मुझे क्षमा कीजिए, युवराज । मैं तो महारानी जी की एक तुच्छ परिचारिका हूं । महारानी जी के आभूषण पहनने की मुझ में ज़बरदस्त लालसा थी । इसीलिए मुझसे यह भूल हुई । आप मुझे क्षमा करें ।"

वास्तविकता जानकर विजयदीप मुस्कराने लगा । उसने कहा, "डरो मत । मैं मिट्टी में छिपे हीरे को पहचानता हूं । तुम चाहे एक परिचारिका ही हो, मैं तुमसे शादी करूंगा ।"

वीणा ने अब अपने आपको संभाला और बोली, "मैं आपसे एक सवाल करना चाहती

हूं । विवाह के लिए यदि मैं स्वीकृति न दूं तो आप क्या करेंगे?"

वीणा का प्रश्न सुनकर विजयदीप थोड़ा हैरान हुआ । फिर बोला, "मैं इस देश का भावी स्वामी हूं । मैं जिस भी युवती से विवाह करना चाहूंगा, वह कभी मुझे इनकार नहीं करेगी । यदि तुम्हें मेरा प्रस्ताव स्वीकार नहीं है तो मैं कहूंगा कि तुम या तो बड़ी घमंडी हो या महामूर्ख हो । सुंदरियों की कमी नहीं । मुझे जैसे ही कोई तुमसे सुंदर युवती दिखाई दी, मैं उसे शादी कर लूंगा ।"

अब वीणा एकाएक बोली, "मैं आपसे क्षमा चाहती हूं, युवराज । मैं आपसे शादी नहीं कर सकती । इसके लिए मैंने पहले ही किसी को वचन दे रखा है । मैं उसी से शादी करूंगी ।"

और यह कहकर वह वहां से चली आयी और उसने शिवकुमार से शादी कर ली ।

बैताल ने कहानी समाप्त करते हुए कहा, "राजन्, वीणा बचपन से ही किसी राजकुमार के साथ विवाह करने के सपने देखा करती थी । जब उसका सपना साकार होने को था तो उसने वह अवसर अपने हाथ से जाने दिया । क्यों? रानी का कहना था कि उसके पास सौंदर्य-पारखी का हृदय नहीं है, और राजा ने कहा कि उसे साहस और धैर्य से काम लेना चाहिए । क्या इस सब के कारण वीणा को लगा कि वह राजकुमार की योग्य पत्नी नहीं बन सकती? शायद उसे लगा हो कि वह अपने बूते से बाहर जा रही है । इसीलिए शायद उसने राजकुमार का प्रस्ताव ठुकरा दिया । ये कुछ अजीब संदेह हैं जो मुझे विचलित कर रहे हैं । आप इनका उत्तर दें । यदि इनका उत्तर जानते हुए भी आप चुप रहेंगे तो आपका सर फट जायेगा ।"

राजा विक्रम को मजबूर होकर उत्तर देना ही पड़ा, "वीणा ने यदि युवराज का तिरस्कार किया तो इसके पीछे मुझे एक ही कारण दिखाई देता है । यह कहना ग़लत है कि जब उसका सपना साकार होने को था तो वह सब उसे अपनी शक्ति-सामर्थ्य के बाहर लगा । याद करो, युवराज ने उसके विवाह का प्रस्ताव ठुकराये जाने पर क्या कहा था । उसने कहा था कि यदि वीणा यह प्रस्ताव स्वीकार नहीं करती तो वह उससे बढ़कर कोई सुंदरी ढूंढे निकालेगा और उससे विवाह करेगा । इसका अर्थ तो यह हुआ कि उसे वीणा के सौंदर्य के प्रति निष्ठा नहीं थी । उसे यदि उससे बढ़कर कोई सुंदरी मिलती तो वह उसे एक तरफ कर देता । ऐसी स्थिति में वीणा पति के प्यार से वंचित हो जाती । इसीलिए उसने युवराज के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और तुरंत अपने गांव को लौट आयी और शिवकुमार की पत्नी बन गयी ।"

उत्तर देने से राजा विक्रम का मौन भंग हो गया था । मौन भंग होते ही बैताल लाश समेत वहां से अदृश्य हो गया और पहले की तरह उसी पेड़ की शाखा से जा लटकने लगा ।

(कल्पित)

(आधार : शिवनागेश की एक रचना)

मां का ऋण

गणपति नगर में शांताबाई नाम की एक महिला रहती थी। उसके दो बेटे थे। दोनों का विवाह हो चुका था। शांताबाई विधवा थी। इसलिए वह छः महीने एक बेटे के यहां रहती और छः महीने दूसरे बेटे के यहां। बड़ा बेटा खासा खाता-पीता था। छोटे बेटे के पास अपना मकान तो था, पर उसकी नौकरी छोटी थी जिससे वह अपने परिवार की गुज़र करता।

जिन दिनों शांताबाई अपने छोटे बेटे के यहां रह रही थी, वह एकाएक बीमार पड़ी और फिर उसने अपने प्राण त्याग दिये। बड़े बेटे को जैसे ही इसके बारे में पता चला, वह परिवार-समेत चला आया।

बड़े भाई का नाम रामराज था और छोटे का सोमराज। रामराज ने सोमराज से विलाप करते हुए कहा, "सोम, मां का ऋण तुम्हीं ने चुकाया है। इसीलिए मां ने अपने प्राण यहीं छोड़े। अब मां के अंतिम संस्कार का सारा खर्च मैं ही उठाऊंगा।"

वहां पर उनके कुछ रिश्तेदार भी मौजूद थे। उन्होंने कहा, "वाह! वाह! बेटा हो तो ऐसा! रामराज एकदम खरा सोना है!"

रामराज ने यह बात तो कह दी थी, लेकिन जब उसे अहसास हुआ कि उसे तेरह दिन तक ऐसे ही खर्चा उठाना पड़ेगा तो उसके होशोहवास उड़ गये।

आखिरी दिन दोनों भाई अपने रिश्तेदारों के साथ एक तालाब पर गये। वहां उन्होंने स्नान किया। तब तक पुरोहित अपना मंत्र-पाठ करता रहा। मंत्र पाठ जब समाप्त हुआ तो रामराज ने वहां चारों ओर मंडरा रहे कौवों के सामने पिंडदान किया और फिर बड़ी श्रद्धा से उन्हें नमस्कार किया।

लेकिन ताज्जुब। चाहे आस-पास ढेरों कौए थे, पर एक भी कौआ आगे नहीं आया।

उदय कुमार

इससे पिंड अनुछुआ रह गया ।

दोनों भाइयों के साथ उनके सगे-संबंधी वहां मौजूद थे । वे सब मृत-आत्मा का ध्यान करके उनसे प्रार्थना करने लगे कि वे पिंड को स्वीकार करें । इस पर भी कौओं में कोई हरकत नहीं हुई ।

तब रामराज का मामा बोला, "दीदी, लोग तुम्हारे बड़े बेटे की उदारता की सराहना कर रहे हैं । यही तुम्हारे दुःख का कारण है न? सोम ने जो खर्च किया है, मैं उसके बारे में भी सब को बताये देता हूं । तुम कृपया यह भोजन स्वीकार करो ।" और यह कहकर उसने नमस्कार किया ।

उसका यह कहना था कि सभी कौए आगे बढ़ आये और उस पिंड पर टूट पड़े । तब रामराज के मामा ने कहा, "मां के लिए सभी बेटे बराबर होते हैं । जब बड़े बेटे रामराज ने श्राद्ध का सारा खर्च अपने ऊपर ले लेने की बात कही तो छोटे बेटे सोमराज ने गांव के अनाथालय को एक बड़ी रकम चंदे के रूप में दे दी और यह भी व्यवस्था की कि हर वर्ष मां के श्राद्ध के दिन ग़रीबों को अन्नदान मिले ।"

मामा की बात सुनकर रामराज को पश्चात्ताप हुआ । अपने भाई को संबोधित करते हुए कहने लगा, "सुनो मेरे प्यारे भाई, असली बात मैं तुम्हें बताने जा रहा हूं । मां के श्राद्ध के इस खर्च को लेकर मैं मन ही मन दुखी था । लेकि तुमने तो कमाल कर दिया । तुम चुपचाप अनाथालय गये और वहां पर एक भारी रकम मां के नाम चंदे के रूप में दे आये । मां का ऋण तो तुमने ही चुकाया है । तुम महान हो!"

सोमनाथ ने, बस, इतना ही कहा, "भैया, मां के परलोक-सुख के लिए जो खर्च किया, तुमने किया । मैंने इस बात का ख्याल रखा कि मां का नाम इस लोक में रह जाये । हां, एक बात तो है-हम क्या, कोई भी, किसी तरह से भी, मां का ऋण नहीं चुका सकता । हमें जन्म देने और पालने में जितने कष्ट वह उठाती है, उसका हिसाब कोई चुकता नहीं कर सकता ।"

भारत में एक ऐसा पक्षी भी है जिसने एक भौगोलिक खंड को नाम दिया है । यह पक्षी है राजहंस और वह खंड है गुजरात का कच्छ, जिसे अब 'राजहंस नगर' कहा जाता है ।

राजहंस एक पीला, गुलाबी, सफेद पक्षी है जिसकी टांगें लंबी, पतली और गुलाबी होती हैं और जिसकी लंबी गर्दन सांप की तरह बल खाती है । इसका आकार पालतू मुर्गाबी के समान होता है । इसकी ऊंचाई लगभग ४ फुट (१२० सें.मी.) होती है । इस पक्षी की खास पहचान है इसकी भारी भरकम गुलाबी चोंच जो अपनी लंबाई के मध्य में एक कोण पर मुड़ी रहती है । इसके झिल्लीदार पंजे बत्तख के पंजों की तहर होते हैं ।

राजहंस उथले पानी में चलकर अपना खाद्य ढूंढ़ता है । यह अपना सर पानी में पूरी तरह डुबाये रखता है और अपनी लंबी, मुड़ी हुई गर्दन की सहायता से अपना भोजन ग्रहण करता है । चोंच इस प्रकार मुड़ी रहती है कि वह भूमि को खुरच सकती है और जो कुछ भी मिलता है उसे झटक लेती है । खाद्य-पदार्थ जीभ की सहायता से साफ किये जाते हैं, क्योंकि वह छलनी का काम करती है ।

अगर ज़रूरत पड़े तो राजहंस तैर भी सकता है । यह पक्षी झीलों में, छिछले जल स्थलों में और कीच वाली जगहों में झुंडों में रहता है । आम तौर पर यह छोटे-छोटे दलों में रहना पसंद करता है और तेज़ी से अपने पर फड़फड़ाते हुए अंगरेज़ी अक्षर वी (V) के आकार में उड़ता है ।

अक्तूबर और मार्च के दौरान कच्छ के रन में ढेरों राजहंस देखे जा सकते हैं । इनकी संख्या पांच लाख से दस लाख के बीच आंकी गयी है । ऐसा विश्वास किया जाता है कि कच्छ राजहंसों का संसार में सबसे बड़ा प्रजनन स्थल है ।

वह नन्हा गॉल्फ खिलाड़ी

क्या कभी। कसी ने यह सुना है कि बच्चे भी गॉल्फ खेलते हैं? दरअसल, यह तो अमीर आदमियों का खेल माना जाता है।

दस-वर्षीय शिविन की रुचि गॉल्फ में तब जगी जब वह एक दिन अपने पिता, पर्सी क्वात्रा के साथ गॉल्फ के मैदान में गया। सबसे पहले उसकी नज़र जिस चीज़ पर टिकी, वह थी वहां की हरियाली, सलीके से कटी नन्ही-नन्ही घास का मैदान। शिविन को लगा कि वह वहां बिना किसी बाधा के दौड़ सकता है, और अगर वह गिर भी पड़े तो उसे चोट नहीं आयेगी। उसने ग़ौर किया कि वहां नन्ही, सफेद गेंद को चलाने के बाद कोई भी खिलाड़ी उसके पीछे, उस मैदान में, दौड़ता नहीं। आम तौर पर वह 'सुराख' की तरफ बड़े इत्मीनान से बढ़ता है।

खेल बहुत समय ले रहा था, लेकिन शिविन को यह फौरन पसंद आ गया। उसने अपने पिता से अनुरोध किया कि वह जब भी गॉल्फ के मैदान में आयें, उसे ज़रूर साथ लेते आयें। शिविन की उम्र उस समय पांच वर्ष की भी नहीं थी। पर्सी क्वात्रा तो ठहरे एक ज़बरदस्त खिलाड़ी। इसलिए उन्होंने अपने बेटे को खुद ही उस खेल का प्रशिक्षण देना शुरू कर दिया।

अभी अगले पांच वर्ष बीते भी नहीं थे कि शिविन अपने देश का, बल्कि किसी भी देश का, छोटा चैंपियन बन गया। अब तक वह तीन अंत- राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग ले चुका है। पहली बार जब वह आगे आया तो उसकी उम्र मुश्किल से नौ साल थी। तब इंडो- नेशिया के जकार्ता में बारहवें एशिया पैसिफिक जूनियर चैंपियनशिप का आयोजन हो रहा था। वहां पर पांच देशों से बीस खिलाड़ी आये हुए थे और इसे दसवां स्थान मिला था।

पिछले वर्ष फिर उसने नौवें टोपोलीनो विश्व जूनियर चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व किया। भारत से तीन और खिलाड़ी भी गये थे, लेकिन १८ देशों में से आने वाले खिलाड़ियों में यह सबसे कमउम्र था। इसे देखकर इटली के एक समाचारपत्र ने इसे 'पिकोलो' (नन्हा) कहकर संबोधित किया और इसके 'ग़ज़ब के शॉट्स' की प्रशंसा की।

तेरहवां एशिया पैसिफिक जूनियर चैंपियनशिप नयी दिल्ली में हुआ। यहां इसे १२ वर्ष की उम्र के खिलाड़ियों में रजत पदक मिला। इसका मुकाबला विश्व चैंपियन जैसोन गिरोनेला से था और इसने इस फिलिपींस के खिलाड़ी को खूब छकाया। लेकिन जैसोन इससे बेहतर खिलाड़ी साबित हुआ। आखिर शिविन को बहुत ही पक्के फ्रांको टोबियाज़ पर आठ स्ट्रोक की बढ़त मिली। वह चौथे स्थान पर आया, थाइलैंड के सोमसामार्ट से वह छः स्ट्रोक आगे था जो तीसरे स्थान पर आया। इस प्रकार इसने रजत पदक जीता। जुलाई में सान डीगो में विश्व जूनियर चैंपियनशिप के लिए मुकाबला होने जा रहा है। शिविन का उसमें शामिल होना निश्चित है।

इस बीच कलकत्ता में होने वाले राष्ट्रीय गॉल्फ़ चैंपियनशिप के मुकाबले में शिविन को १५ वर्ष की उम्र से कम वाले खिलाड़ियों में राष्ट्रीय सब-जूनियर चैंपियन घोषित किया गया। राष्ट्रीय ख़िताब पाने वालों में वह अब तक का सबसे छोटा गॉल्फ खिलाड़ी है।

क्या तुम जानते हो?

१. भारत में प्रचलित साहित्य में दूसरी सबसे प्राचीन कृति कौन-सी है?
२. परशुराम का जन्म किस कुल में हुआ था?
३. जूडास ने हज़रत ईसा को किस उद्यान में दग़ा दिया?
४. भारत की राष्ट्रीय कांग्रेस का मूल नाम क्या था?
५. भारत के एक उप-राष्ट्रपति दस वर्षों तक उसी पद पर बने रहे । वह कौन थे?
६. सम्राट हर्षवर्धन का वध उसके एक मंत्री ने किया था । वह कौन था?
७. शक संवत् कब शुरू हुआ? यह किस उपलक्ष्य में शुरू हुआ?
८. भगवान् विष्णु ने किस हाथी को मगरमच्छ से बचाया था?
९. जूलियन कैलेंडर किसके नाम पर शुरू हुआ?
१०. दक्षिण भारत का एक उत्सव उत्तर के भाईदूज के समान है । इस उत्सव का नाम क्या है?
११. एक प्रचलित खेल का नाम पहले कभी 'पूना' था । वह कौन-सा खेल है?
१२. कलकत्ता के एक विशेष समुदाय में कबूतर-दौड़ बहुत प्रचलित है । वह कौन सा समुदाय है ।
१३. सुविख्यात संस्कृत रचना "हर्षचरित्" का रचनाकार कौन है?
१४. किस नदी के आर-पार नागर्जुन सागर बांध बनाया गया है?
१५. महाबलिपुरम का निर्माण किसने की?

उत्तर

१. यजुर्वेद
२. भृगु नाम के योद्धा-पुरोहितों के कुल में ।
३. गेथ्सेमाने ।
४. इंडियन नेशनल यूनियन ।
५. डॉ. एस. राधाकृष्णन ।
६. अर्जुन नाम के मंत्री ।
७. ७८ ईसवी में कनिष्ठ का राज्याभिषेक ।
८. गजेंद्र ।
९. जूलियस सीज़र, जिसने ई.पू. ४६ में महीनों और वर्ष के हिसाब की शुरुआत की थी ।
१०. कनुपोंगल, जब बहनें अपने भाइयों के लिए प्रार्थना करती हैं और उन्हें उपहार देती है ।
११. बेडमिंटन ।
१२. चीनी ।
१३. बाणभट्ट ।
१४. कृष्णा ।
१५. नरसिंह वर्मा ।

चंदामामा की खबरें

अंतरिक्ष में कीर्तिमान

रूसी अंतरिक्ष यात्रियों ने अपने अंतरिक्ष स्टेशन "मीर" में महीनों बिताये हैं। लेकिन जब अमरीकी अंतरिक्ष शटल "एंडैवर" मई के आखिरी दिनों में अपनी नवीनतम अंतरिक्ष यात्रा से लौटा तो इसने एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। इसके फ्लाइट कमांडर, डान ब्रैंडस्टाइन, ने तब तक ७४० घंटे या लगभग ३१ दिन की उड़ान पूरी कर ली थी। यह चार बार अंतरिक्ष में गया। इससे पहले नॉर्म थगार्ड ने ६०४ घंटे का रिकार्ड कायम किया था। वह भी चार बार अंतरिक्ष में गया था।

नगर-बहनें

नगरों की भी बहनें होती हैं। अमरीका के कोलोराडो के डेनवर की एक नहीं, आठ बहनें हैं, और आठवीं बहन मद्रास है। यहां शीघ्र ही मद्रास-डेनवर उद्यान बनाया जायेगा जिसका उद्देश्य यहां के रहने वालों में मद्रास के बारे में ज्ञान को बढ़ाना है। डेनवर पहाड़ों में स्थित है। यहां डेनवर-मद्रास सिस्टर सिटी कार्यक्रम दस साल पहले शुरू किया गया था। उद्यान का तैयार किया जाना उस कार्यक्रम का एक हिस्सा है।

किस की इज़्ज़त?

श्रीपुर नाम के गांव में नारायण नाम का एक धनवान रहता था। श्रीधर उसके बचपन का दोस्त था और पड़ोस के नरसिंहपुर गांव में रहता था।

एक दिन श्रीधर नारायण को देखने श्रीपुर चला आया। बहुत दिनों के बाद वह श्रीपुर आया था। उसे उम्मीद थी कि उसे अपने दोस्त नारायण से ढेर सारा स्नेह मिलेगा। उसे वहां एक काम भी था।

श्रीधर जैसे ही नारायण के यहां पहुंचा, नारायण को कुछ अचंभा हुआ। श्रीधर के कपड़े फटे-पुराने थे। नारायण को समझते देर न लगी कि श्रीधर बेहद ग़रीबी का शिकार है। उसे लगा कि वह उससे मदद मांगने ही आया है। उसने उससे यह भी नहीं पूछा कि उसके हाल-चाल क्या हैं और वह किस काम से आया है। वह तो, बस, अपनी बड़ाई किये जा रहा था।

श्रीधर नारायण की बातें बड़े धैर्य से सुनता रहा। इसी बीच वहां एक व्यक्ति आया और नारायण के हाथ पर एक चिट्ठी रखकर चला गया। वह चिट्ठी पढ़कर नारायण का घमंड और भी उफन पड़ा। वह बोला, "आज रात जमींदार ने मुझे दावत पर बुलाया है। यह चिट्ठी उसने खुद लिखी है।"

नारायण की बात सुनकर श्रीधर हंस पड़ा। कहने लगा, "जब तुमने अपनी कमाई की बात की तो मैं समझ गया था कि तुम्हारे ठाठ क्या हैं। मुझे, दरअसल, ज़मींदार से काम है। वह मैं तुम्हारे ज़रिये करवाना चाहता हूं। इसी आशा से मैं यहां आया था।"

नारायण ने श्रीधर की बात को मज़ाक में उड़ा देना चाहा। बोला, "अरे, वाह। तुम्हारा और ज़मींदार से काम! ह! ह! ह! ह! क्या ग़जब की बात कही।"

पद्मा द्विवेदी

से दूर रखने लगेगा और मैं उसकी नज़रों में गिर जाऊंगा ।"

लेकिन श्रीधर चुप नहीं रहा। वह बार-बार अनुनय करता रहा और कहता रहा कि किसी न किसी तरह वे खेत उसे दिलवा दिये जायें। उसने यह भी कहा कि वह बड़ी तंगी में दिन काट रहा है ।

लेकिन नारायण टस से मस नहीं हुआ । कहने लगा, "अब दावत पर जाने का वक्त हो गया है। अच्छा हो तुम कल आकार मिलो ।" लााचार होकर श्रीधर को वहां से लौटना पड़ा ।

दूसरे दिन फिर श्रीधर नारायण के यहां पहुंचा । तब नारायण के पास एक और व्यक्ति बैठा हुआ था । नारायण ने श्रीधर को उस व्यक्ति का परिचय देते हुए कहा, "इनका नाम धनीराम है । हमारे गांव के काफी धनी व्यापारी हैं । यहां रोज़ आकर थोड़ी देर के लिए मुझ से बतियाते हैं । इसे इन्हें बड़ी राहत मिलती है?" धनीराम ने एक बार श्रीधर की ओर देखा और फिर नारायण को संबोधित कर कहने लगा, "अजीब बात है! तुम ऐसे-ऐसे लोगों से दोस्ती रखते हो! यह तो कोई बोझ ढोने वाला दिखता है!"

इस पर नारायण, जैसे कि चौंका, कहने लगा, "आप क्या कहते हैं? इसका नाम तो श्रीधर है । बचपन में हम दोनों एक ही पाठशाला में पढ़ते थे। इसी परिचय के कारण यह जब-तब मेरे यहां आता रहता

श्रीधर ने इसका प्रतिकार नहीं किया । कहने लगा, "हां, भई, उनसे ही थोड़ा काम है । तुम्हारे ज़मींदार के कुछ खेत हमारे गांव में हैं । फिलहाल उनमें कोई खेती नहीं हो रही । मैंने सुना है कि इस साल ज़मींदार साहब उन खेतों को पट्टे पर देने का विचार रखते हैं । तुम ज़मींदार से कहकर मुझे वे खेत दिलवा दो । बस, इतनी सी ही मदद की मैं तुम्हारे पास उम्मीद करता हूं ।"

नारायण को शायद यह बात समझ में नहीं आयी । "एक बात कहूं । बुरा नहीं मानना," वह बोला, "हमारा ज़मींदार केवल रुतबा देखता है, आदमी नहीं । अगर उसे पता चल गया कि तुम्हारे जैसा फटेहाल व्यक्ति मेरा दोस्त है तो वह मुझे भी अपने

है। इसे आप बोझा ढोने वाला क्यों कह रहे हैं, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा। आप ने ऐसा क्यों कहा?"

धनीराम ने बात को पेचीदा बनाये बिना साफ-साफ शब्दों में कहा, "कल रात मैं दुकान बंद करके किसी मज़दूर की राह देख रहा था। मुझे आम की दो टोकरियां घर पर ले जानी थीं। मेरे किसी परिचित ने उन्हें भेजा था। तब मैंने देखा कि यही व्यक्ति एक बड़ा-सा बोझा उठाये बाज़ार में से निकल रहा था। मैंने इसे रोककर कहा कि यह उस बोझे को पहुंचाकर आम की टोकरियां भी मेरे घर तक पहुंचा दे। इसने मेरी ओर देखकर केवल मुस्करा भर दिया, और फिर वहां से चल दिया। इसीलिए तो अब मैंने इसे आसानी से पहचान लिया है।" और इन शब्दों के साथ धनीराम वहां से चलता बना।

यह सब सुनकर नारायण बड़े चक्कर में पड़ा। उसे धनीराम की बात बड़ी अपमानजनक लगी। वह ताव में आ गया और श्रीधर से बोला, "ऐसा छोटा काम करना क्या तुम्हारी इज़्ज़त के खिलाफ नहीं था? मुझसे मांगते तो मैं दस, बीस तुम्हें यों ही दे देता। तुम्हें वह बोझा ढोने की क्या ज़रूरत पड़ी थी? मुझे इसमें बड़ी हत्तक महसूस हो रही है कि एक बोझा ढोने वाला मेरा दोस्त हो। अब कान खोलकर सुन लो—आइंदा तुम मेरे घर नहीं आओगे, और न ही मेरी इज़्ज़त इस तरह मिट्टी

में मिलाओगे!"

नारायण की बात सुनकर श्रीधर हंसे बिना न रह सका। बोला, "क्या करूं, मुझे वह बोझा ढोना ही था। यह काम मैंने तुम्हारी इज़्ज़त मिट्टी में मिलाने के लिए नहीं किया। मैं तुम्हारी इज़्ज़त की रक्षा करना चाहता था, क्योंकि वह बोझा तुम ही थे।"

श्रीधर का उत्तर सुनकर नारायण एकदम गुस्से में आ गया और तेज़ आवाज़ में कहने लगा, "क्या बकते हो! वह बोझा मैं था?"

"अरे, इतना गुस्सा मत करो। मेरी बात ज़रा ध्यान से सुनो। कल रात जब मैं अपने गांव को वापस जा रहा था, तभी तुम ज़मींदार के मकान से बाहर आये और वहीं रास्ते में बेहोश होकर लुढ़क पड़े। मैंने तुम्हें

देखा । तुमसे शराब की बड़ी तीखी बू आ रही थी और तुम कुछ-न-कुछ ऊल-ज़लूल बके जा रहे थे । मैंने सोचा कि इस हालत में अगर तुम्हें कोई देखेगा तो तुम्हारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल जायेगी । मेरे पास एक बोरा था । मैं तुम्हें उसी बोरे में भर लिया, और तुम्हें ढोता हुआ तुम्हारे घर पहुंचा । उसी समय धनीराम ने मुझे देखा था । मैं तो इस गांव के लिए नया हूं । मुझे अपनी बेइज़्ज़ती की कोई परवाह नहीं । परवाह तो मुझे तुम्हारी इज़्ज़त की थी और वह मैंने बचा ली ।" श्रीधर ने धीमे से कहा ।

उसी समय नारायण की पत्नी मंदिर से वापस आयी । उसने श्रीधर की बात सुन ली थी । कहने लगी, "हां, श्रीधर भैया ठीक कहते हैं । वक्त पर अगर यह वहां पर न पहुंचते तो आप कहीं के न रहते । आपको देख-देखकर मैं तमाम रात सोयी नहीं । अब सुबह मंदिर में आपके नाम की पूजा करवाकर लौट रही हूं । हम श्रीधर भैया के ऋणी हैं । रात की घटना सब को मालूम हो जाती तो लोग-बाग आपकी खिल्ली उड़ाते और ज़मींदार भी आपसे पीछा छुड़ाता, क्योंकि कोई यह नहीं चाहेगा कि उसका दोस्त पियक्कड़ हो । यदि आप इस स्थिति से बचे हैं तो इसी दोस्त की वजह से । इसी ने ऐन वक्त पर आपकी मदद की ।"

अब नारायण को असलियत का पता चला । उसका सर अपने आप झुक गया और वह श्रीधर से बोला, "मित्र! मुझे अपने अहंकार का फल मिल गया है । मैं इसके लिए अब प्रायश्चित्त करूंगा । तुमने अपनी इज़्ज़त एक तरफ रखकर मेरी इज़्ज़त बोरे में बंद करके सही-सलामत मेरे घर पहुंचायी । मैं तुम्हारा आभारी हूं । मैं शपथ लेता हूं कि भविष्य में मुझ से ऐसी ग़लती कभी नहीं होगी ।"

और यह कहते हुए उसने श्रीधर को अपने गले से लगा लिया । फिर उसने उसी दिन ज़मींदार से बात करके उसका काम भी करवा दिया ।

कुशल का चातुर्य

चंदनपुर गांव में कुशल नाम का एक पंडित रहता था। उस गांव में अधिकतर मजदूर और व्यापारी ही रहते थे। इसलिए कुशल के पांडित्य को पहचानने वाला कोई नहीं था। कुशल का समय बड़ी मुश्किल से कट रहा था। इसलिए उसे मजबूर होकर राजा से सहायता पाने के लिए राजधानी जाना पड़ा।

बहुत कोशिश करने पर भी कुशल को राजा के दर्शन नहीं हुए। पर सौभाग्यवश उसकी भेंट चतुर से हो गयी। चतुर चंदनपुर का ही रहने वाला था और वह कुशल का बचपन का दोस्त भी था। वह दस साल पहले अपना गांव छोड़कर राजधानी में चला आया था और किसी प्रकार उसने राजदरबार में भी नौकरी पा ली थी और कुछ ही समय में वह राजा का विश्वास-पात्र बन गया था।

कुशल को देखकर चतुर बोला, "मैं तुम्हें राजा के दर्शन करवाये देता हूं, लेकिन राजा को प्रसन्न करना तुम्हारा काम होगा।" चतुर ने सहमति में अपना सर हिला दिया।

अगले ही दिन उसे राजा के दर्शन हो गये। कुशल के पांडित्य पर राजा चकित रह गया। उसने उससे कहा कि वह दरबार में ही रहे। तब कुशल बोला, "महाराज, मैं चंदनपुर छोड़ना नहीं चाहता। आप कृपा करके मुझे कुछ धन दिलवा दें। मैं वहीं रहकर खेती करूंगा, और खेती में ही अपना जीवन बिता दूंगा।"

राज ने कुशल को पचास हजार मोहरें दिलवा दीं। फिर कहने लगा, "मेरे पास राजनीति पर लिखा एक पुराना ग्रंथ है। कुछ पंडितों का कहना है कि उसमें कुछ ऐसी बारीकियां हैं जो चाणक्य के अर्थशास्त्र में भी नहीं हैं। पर उस ग्रंथ की भाषा बड़ी गंभीर है। दरबारी पंडित भी उसकी व्याख्या

रामकुमार त्रिपाठी

सोच भी नहीं सकता था कि राजा कुशल को इतना पसंद करेगा। वह पिछले दस वर्षों से राजा के यहां काम कर रहा था। वैसे तो उसके दिन बड़े आराम से कट रहे थे, लेकिन उसके पास अधिक धन नहीं था। उधर कुशल ने तो एक बार में ही पचास हज़ार मोहरें प्राप्त कर ली थीं। चतुर इस बात को लेकर बहुत कुढ़ रहा था। उसके मन में कुशल में प्रति ईर्ष्या भर गयी थी।

इसलिए उसने निर्णय लिया कि राजा के मन में किसी तरह कुशल के प्रति तिरस्कार जगाना चाहिए। उसने राजा से कहा, "प्रभु, मैं बहुत पहले कुशल का परिचय आपसे कराना चाहता था। लेकिन उसमें तो बड़ा अभिमान है। मैंने उसे कई-बार बुलवाया कि उसे आपके दर्शन करवा सकूं, लेकिन उसने हर बार इनकार कर दिया। वह आपके पास तभी आया है जब उसका पेट खाली है, वरना वह कभी नहीं आता।"

नहीं कर पा रहे। आप एक वर्ष के भीतर उसकी व्याख्या मुझे लिख दीजिए। मैं आपको पचास हजार मोहरें और दूंगा, और आपका सत्कार करूंगा।" ग्रंथ को लेकर कुशल अपने गांव चला आया।

कुशल चला गया तो राजा ने चतुर से उसकी प्रशंसा की और कहने लगा, "जब से तुम मेरे दरबार में आये हो तुमने सबसे बढ़िया जो काम किया है, वह है कुशल का मेरे साथ परिचय करवाना। मुझे इससे बहुत आनंद मिला।"

इसके बाद भी राजा अक्सर चतुर से कुशल की प्रशंसा करता रहता।

कुशल की उस प्रकार प्रशंसा किया जाना चतुर को अच्छा नहीं लगा। वह यह कभी

चतुर से इस प्रकार के शब्द सुनकर राजा ने उससे कुशल के बारे में बात करना बंद कर दिया। इसी प्रकार छः महीने बीत गये। एक दिन राजा ने उससे कहा, "मैं जानना चाहता हूं कि जो ग्रंथ मैंने कुशल को दिया था, उसकी व्याख्या उसने कहां तक और कैसे की है। एक बार उसे ख़बर भेजकर यहां बुलवाओ।"

चतुर को लगा कि कुशल को राजा की नज़रों में गिराने का यह बढ़िया मौका है। इसे हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इसलिए

उसने कुशल को खबर नहीं भिजवायी, बल्कि दो दिन बाद उसने राजा के सामने पेश होकर कहा, "प्रभु, कुशल ने खबर भेजी है कि अभी कुछ समय तक वह आपसे भेंट करने नहीं आ सकता।"

लेकिन चतुर की आशा के विपरीत राजा ने कुशल के प्रति गुस्सा ज़ाहिर नहीं किया। उसने केवल यही कहा, "भूल मेरी है। मैं उसे एक वर्ष का समय दिया था। इस तरह बीच में व्यवधान डालना मुझे शोभा नहीं देता। अब मैं वक्त निकालकर स्वयं ही उसके पास जाऊंगा और देखूंगा कि वहां किस तरह का काम हो रहा है। मेरे लिए यही मुनासिब होगा। चलो, कल ही चंदनपुर चलते हैं।"

राजा की बात सुनकर चतुर के हाथ-पांव फूल गये। उसे लगा कि इससे उसकी पोल खुल जायेगी। इसलिए कुछ सोचकर बोला, "प्रभु, मैं स्वयं ही जाकर कुशल को मनाकर लिवा ले आता हूं।" और इतना कहकर वह चंदनपुर के लिए निकल पड़ा।

कुशल के घर पहुंचकर उसने उससे कहा, "तुम्हारी महानता मैंने अभी-अभी पहचानी है। तुम्हारे पांडित्य के प्रति राजा इतना अनुरागी है कि इससे मुझमें ईर्ष्या जग गयी है। मुझे लगता है मैंने अपने लिए आफत मोल ले ली है।"

फिर उसने उसके बारे में राजा से जो कहा था उसे सच-सच बता दिया। "राजा को अगर असलियत का पता चल जाता तो मेरी नौकरी फौरन खत्म हो जाती और मैं जेल की हवा खाता। अब तुम ही मेरी रक्षा

कर सकते हो ।"

"तुम्हारी रक्षा का एक ही उपाय है । तुम राजा से यही कहो कि मैं उनके दर्शन के लिए आना नहीं चाहता । इस प्रकार तुम्हारी बात की पुष्टि हो जायेगी । बाकी फिर देख लेंगे ।" कुछ सोचते हुए कुशल ने कहा ।

चतुर ने अपने मित्र के मन के खरेपन को समझा और उसकी भरपूर प्रशंसा करने लगा । अपनी भूल के लिए उसने बार-बार माफी मांगी और फिर वहां से लौट पड़ा ।

लेकिन वह अभी गांव के छोर पर ही पहुंचा था कि उसे राजा का रथ दिखाई दिया । चतुर ने फौरन राजा से कहा, "प्रभु, कुशल ने कहा है कि राजधानी आने के लिए उसके पास समय नहीं है । उसने यह भी कहा है कि यही बात मैं आपसे कह दूं ।"

चतुर की बात सुनकर राजा हँस पड़ा । "तुम्हारा मित्र अभिमानी नहीं है । मैंने उसे जो काम दिया था उसमें वह जी-जान से जुट गया था । इसीलिए उसने कहा कि बीच में वह आ नहीं पायेगा । मैं जानता था कि तुम्हें अपनी कोशिश में कामयाबी नहीं मिलेगी । इसीलिए मैं स्वयं यहां आया हूं ।"

इसके बाद राजा कुशल से मिलने उसके घर की ओर बढ़ गया और फिर कुछ दिनों तक चंदनपुर में ही रहा । चंदनपुर में रहकर वह कुशल से नियमित रूप से ग्रंथ की व्याख्या सुनता रहा । जब वह राजधानी लौटा तो वह बहुत संतुष्ट था ।

यह सब देखकर चंदनपुर के लोगों की समझ में एक बात आ गयी कि चतुर जैसे लोग अगर राजा के पास सालों-साल भी रहें तो भी वे अपने स्वार्थ की ही सोचेंगे, लेकिन अगर कुशल जैसे पंडित हों तो वे अपने निःस्वार्थ व्यवहार से चारों ओर अपनी कीर्ति फैलायेंगे ।

अब चंदनपुर के निवासी कुशल का विशेष आदर-सत्कार करते थे । दूसरे, यह निश्चित हो गया था कि पंडितों और कलाकारों के लिए भी वहां जगह है और वे अपनी आजीविका सहज ही पा सकते हैं ।

महोदर की बात सुनकर कुंभकर्ण तुरंत उन राक्षसों के साथ रावण के यहां पहुंचा ।

कुछ राक्षस कुंभकर्ण से पहले ही वहां पहुंच चुके थे । उन्होंने रावण को सूचित कर दिया था कि कुंभकर्ण नींद से जग गया है और उसे उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा है । उन्होंने रावण से यह भी जानना चाहा कि क्या कुंभकर्ण सीधा युद्धभूमि में जाये या उनके पास आये ।

"मैं पहले उसे देखना चाहता हूं । उसे पूरे सम्मान के साथ यहां लिवा ले आओ ।" रावण ने कहा ।

राक्षसों ने जाकर यह बात कुंभकर्ण से कह दी । यह ख़बर पाकर कुंभकर्ण उठा और तेज़ गति से रावण के महल की ओर बढ़ा ।

प्राचीरों के बाहर से वानर कुंभकर्ण को देख चुके थे । मारे डर के वे इधर-उधर भाग रहे थे ।

कुंभकर्ण को तब राम ने भी देखा । उन्होंने यह भी देखा कि वानर कुंभकर्ण से बुरी तरह भयभीत होकर भाग रहे हैं । तब उन्होंने विभीषण से प्रश्न किया, "एक बड़े से काले बादल की तरह रहा वह कौन राक्षस हो सकता है?"

विभीषण का उत्तर इस प्रकार था, "वह विश्रवसु का पुत्र कुंभकर्ण है । युद्ध में उसने यमराज और इंद्र को भी जीत लिया था । उसका शरीर जितना विशाल है, उतना और

किसी राक्षस का नहीं। दूसरे राक्षस तो वरदान प्राप्त करके बलशाली और पराक्रमी हुए थे, लेकिन कुंभकर्ण की बात ऐसी नहीं। वह दूसरी है—वह जन्म से ही वीर और पराक्रमी है।

पैदा होते ही उसने अपनी भूख मिटाने के लिए हजारों प्राणियों को खा डाला था। इस पर लोगों में अफरा-तफरी मच गयी और वे भाग खड़े हुए। उन्होंने इंद्र के पास जाकर उसे सारी बात बता दी, इस बारे में फरियाद की।

इंद्र ने कृद्ध होकर इस पर वज्रायुध चलाया। तब कुंभकर्ण ने जो सिंहनाद किया, उससे धरती के समस्त प्राणी कांप उठे। इंद्र को गुस्सा आया और उस ने ऐरावत हाथी का एक दांत उखाड़कर कुंभकर्ण के सीने में भोंक दिया।

फिर वह उन सब प्राणियों को लेकर ब्रह्मा के पास पहुंचा। वहां उसने उनके सामने सब का दुखड़ा सुनाया। इस पर ब्रह्मा ने सभी राक्षसों को बुलवाया। उनमें कुंभकर्ण भी था। उसे देखकर स्वयं ब्रह्मा भी भयभीत हो उठे। उन्होंने कुंभकर्ण से कहा—"लगता है प्राणियों का विनाश करने के लिए जैसे कि विश्रवसु ने तुम्हें पैदा किया है? तुम अब जाओ और हमेशा अचेत होकर सोते रहो।"

ब्रह्मा का इस प्रकार उसे शापित करना था कि कुंभकर्ण उसी क्षण, ब्रह्मा के सामने ही, एकदम से गिरा और वहीं बेसुध होकर नींद में डूब गया। उस समय रावण भी वहीं था।

उसने फौरन ब्रह्मा से कहा, 'यह तो आपका पड़पोता है। इसे इस तरह श्राप देना ठीक नहीं। पर आपने श्राप दे ही दिया। आपका वचन भी खाली नहीं जा सकता। इसलिए इसके सोने और जागने का समय आप निश्चित कीजिए।'

इस पर ब्रह्मा ने निर्धारित किया कि कुंभकर्ण छः महीने नींद में डूबा रहेगा, और केवल एक दिन के लिए ही जगेगा। जब वह जगा होगा, तब भूख मिटाने के लिए अग्निहोत्र की तरह उसके सामने जो कुछ भी आयेगा, उसे वह खा जायेगा। यह एक बहुत बड़ी विपत्ति होगी।

रावण ने अब आपके पराक्रम से डर कर ही इस तरह कुंभकर्ण को जगाने की व्यवस्था की है । उसका विश्वास है, वह बड़ा सहायक होगा । अब यह कुंभकर्ण वानरों को खाने के लिए यहां आयेगा । वानरों को इसके प्रति पहले ही चेता देना चाहिए । यह तो एक चलता-फिरता यंत्रहै ।"

विभीषण की बात सुनकर राम असमंजस में पड़ गये ।उन्होंने नील को आदेश दिया कि लंका के सभी द्वारों पर एक साथ आक्रमण किया जाये ।

गवाक्ष, हनुमान और अंगद वानर वीर बड़ी-बड़ी विशाल शिलाओं के साथ युद्ध के लिए तैयार हो गये ।

इस बीच कुंभकर्ण की नींद की खुमारी अभी गयी नहीं थी । वह उसी खुमारी में चला आया और रावण के सामने उपस्थित हुआ । उसने रावण को बहुत उदास और दुःखी पाया । कुंभकर्ण को देखते ही रावण का उत्साह जैसे कि चौगुना हो गया ।

उसे देखते ही रावण तुरंत अपने आसन से उठा और उसने आगे बढ़कर उसे बड़े प्यार से अपने गले से लगाया । फिर दोनों भाई पास-पास बैठ गये ।

कुंभकर्ण की नींद की खुमारी अब तक नहीं टूटी थी और वह बुरी तरह परेशान दिखाई दे रहा था, क्यों कि उसकी नींद में बाधा डाली गयी थी, असमय ही जगा दिया गया था । लेकिन उसे इतना मालूम हो रहा था कि किसी जरूरी बात पर ही उसे जगाया गया है, इसी लिए अपने आप को वह किसी तरह काबू में रख पा रहा था । वरना अब तक उन जगानेवाले सारे राक्षसों का वह स्वाहा कर चुका होता ।

तभी उसने यह बात भी पहचान ली कि रावण कुछ-कुछ डरा-सहमा दिखायी दे रहा था, उस का चेहरा फीका-फीका दिखाई दे रहा था । इतना सममझने में कुंभकर्ण को कोई कष्ट नहीं महसूस हुआ कि अब रावण के सर पर मौत मंडरा रही है ।

कुंभकर्ण ने प्रश्न किया, "कौन-सी ऐसी मुसीबत आ पड़ी थी कि तुमने मुझे सोते से जगवाया? किस से तुम इस प्रकार डरे हुए हो? लेकिन चिंता की कोई बात नहीं । वह जो भी हो, समझो मौत उसके सर पर आकर

खड़ी हो गयी है ।"

रावण का उत्तर इस प्रकार था, "मुझे राम से बेहद खतरा है । वह सुग्रीव की वानर सेना के साथ सागर पार करके यहां आ पहुंचा है और हमारी सेनाओं को नष्ट किये जा रहा है । युद्ध में बहुत कम वानरों का अंत हुआ है, लेकिन इधर अनेक राक्षस योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गये हैं । अब तुम ही इन वानरों का सफाया करके लंका की रक्षा कर सकते हो । इसीलिए मैंने तुम्हारी नींद में बाधा डाली ।"

इतना कहकर रावण चुप हुआ, कुंभकर्ण की ओर ऐसा देखने लगा मानो वह अपनी बात की प्रतिक्रिया का राह देख रहा हो । मगर कुंभकर्ण थोड़ी देर चुप रहा । उसे पूर्व की अनेक बातें याद हो आयीं । तब अचानक उस के अधरों पर मुस्कराहट उभर आयी ।

अपने भाई की बात याद करके कुंभकर्ण हंस पड़ा और कहने लगा, "हमें जिस बात की आशंका थी, वह ठीक निकली । सीता का अपहरण करके तुमने जो पाप कमाया था, उसका परिणाम अब सामने आ रहा है । इस संबंध में हमारे छोटे भाई विभीषण ने जो कहा था, वही हमारे हित्त में था । पर हो क्या सकता है...!"

कुंभकर्ण की बात रावण को अच्छी नहीं लगी । उसे फिर क्रोध हो आया । जोर से बोला, "तुम मुझ से छोटे हो । तुम्हारा यह हितोपदेश तुम्हें शोभा नहीं देता । अब यह समय पाप और पुण्य की समीक्षा करने का नहीं, अब वह वक्त चला गया है । यह समय पराक्रम दिखाने का है ।"

कुंभकर्ण ने भी अपनी बात जमा कर कही, "राक्षसराज, बेशक मैं तुम्हारा छोटा भाई हूं, लेकिन मैं तुम्हारा हितैषी भी हूं । इसीलिए मैंने ऐसी बात कही । अब यदि तुम्हें चिंता सता रही है तो तुम उस चिंता को फौरन परे फेंक दो ।

"मैं राम और लक्ष्मण, दोनों का सफाया कर दूंगा और वानरों का भी नामोनिशान मिटा दूंगा । मैं जानता हूं कि हमारे राक्षस-वीर अपने सगे संबंधियों की असामयिक मृत्यु से बहुत दुःखी हैं । मैं इन सब को संतोष दिलाऊंगा । जब तक मैं

जीवित हूं, राम तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता ।"

अब महोदर भी बोल पड़ा था । उसने कुंभकर्ण को डांटते हुए कहा, "जिस समय रावण ने सीता को उठा कर लाने की बात कही थी, हम सब उससे सहमत थे । उसने यह काम केवल अपनी इच्छा से नहीं किया । इधर तुम हो कि अपने पराक्रम के गर्व से चूर, अकेले ही युद्ध के मैदान में उतरना चाह रहे हो । यह मुझे उचित नहीं लगता । यह मत भूलो कि राम ने इससे पहले अकेले ही अनेक राक्षसों को मार गिराया है। ऐसे शक्तिशाली व्यक्ति को तुम अकेले कैसे मार सकते हो? जो राक्षस युद्ध के मैदान से लौट कर आये हैं, उनकी तो राम का नाम सुनते ही घिग्घी बंध जाती है ।"

फिर महोदर रावण से बोला, "तुम हम में से कुछ योद्धाओं को भी युद्धभूमि में जाने की आज्ञा दो । हम राम को मार सकें तो ठीक, वरना लौट कर कहेंगे कि हमने राम को खा लिया। तब तुम खूब उत्सव मनाना । सीता को भी वहां आमंत्रित करना और फिर उसे समझा-बुझा कर अपनी स्त्री बना लेना । आगे युद्ध करने की नौबत ही नहीं आयेगी ।"

महोदर की इस मंत्रणा पर कुंभकर्ण सर से पांव तक गुस्से से थर्रा गया । उसने उससे कहा, "अपनी ज़बान को लगाम दो । इससे आगे कहने का साहस नहीं करना । तुम्हारे जैसे डरपोक और बुद्धिहीन किसी काम के नहीं होते । तुम्हारे जैसे कायरों की बातें सुनकर ही रावण का संकट इतना अधिक बढ़ गया है । तुम युद्ध से डरते हो । उधर राजा की हर बात पर हां में हां मिलाते हो और तालियां पीटते हो । तुम जैसे चापलूसों के कारण ही बात इतनी बगड़ गयी है । तुम जैसे लोगों के कारण ही लंका सर्वनाश के कगार पर पहुंच गयी है । जहां तक मैं समझ रहा हूं, खज़ाना खाली हो चुका है, और सेना भी अब अधिक नहीं रही । तुम लोग अपने राजा के शत्रु हो । तुम लोगों ने जो भूलें की हैं, उन के बारे में मैं अच्छी तरह जमकर हूं और उन्हीं का प्रायश्चित करने के लिए मैं युद्धभूमि में जा रहा हूं ।"

कुंभकर्ण की इस उक्ति पर रावण ठठाकर

हंसा और कहने लगा, "महोदर राम के नाम से भयभीत है। इसीलिए वह कहता है कि युद्ध नहीं होना चाहिए। तुम मेरे निकटतम हो। तुमसें बढ़कर शक्तिशाली और कोई नहीं है। तुम तुरंत युद्ध के लिएं प्रस्थान करो। वानरों को खा-खाकर खत्म कर दो। हमें युद्ध में विजय चाहिए। तुम्हें देखते ही वानर भाग खड़े होंगे। यदि राम और लक्ष्मण का कलेजा फट जाये तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी।"

राम ने वानरों का पहले ही हौसला बढ़ा दिया था। वे पेड़ों और शिलाओं से लैस होकर युद्धभूमि में उतरे हुए थे। वे उन्मत्त हाथियों की तरह कुंभकर्ण से भिड़ गये। वे वार पर वार किये जा रहे थे। उनकी शिलाएं पूरी शक्ति के साथ हवा में उड़ रही थीं। पर कुंभकर्ण उनसे रत्ती-भर भी विचलित नहीं हुआ था। वह वानरों को मार गिराये दे रहा था।

कुंभकर्ण के प्रहार की ताब सह न पाकर वानर बेतहाशा युद्धभूमि से भागने लगे। कुछ वानर सागर में कूद पड़े। कुछ हवा में उड़ने लगे। कुछ उसी सेतु पर जा पहुंचे जिस पर चलकर उन्होंने उस विशाल सागर को पार किया था।

वानरों में मची इस भगदड़ को देखकर अंगद सकते में आ गया। वह बार-बार उन्हें चेताने लगा कि वे एक महान शक्ति हैं, वे हजारों की संख्या में हैं, इसलिए कुंभकर्ण से डरकर भागना उनके लिए लज्जा की बात

होगी। लेकिन वानर अपना नैतिक बल खो चुके थे। वे किसी हालत में भी वहां बने रहना नहीं चाहते थे। अंगद उन्हें बराबर चेताता रहा। उसे आखिर सफलता मिली। वे अब युद्ध के मैदान में डट गये थे। हनुमान उस समय अंगद के पास ही खड़ा उसकी सहायता कर रहा था।

कमान अब हनुमान ने संभाल ली थी। वह सेनानायक के रूप में ऋषभ, शरभ, मैंद, धूम्र, नील, कुमुद, सुषेण, गवाक्ष, रंभ, तार, द्विविध और पनस जैसे वानर-वीरों को अपने साथ लेकर आगे बढ़ा। ये सब वीर अपनी जान की बाजी लगाने को तैयार थे।

इस बीच कुंभकर्ण ने वानरों को खाना शुरू कर दिया। द्विविध ने एक पहाड़ को

उखाड़ा और कुंभकर्ण की ओर बढ़ गया। उसने वह पहाड़ फेंका तो कुंभकर्ण पर था, पर उसका निशाना चूकने के कारण वह कुंभकर्ण के पीछे राक्षस सेना पर जा गिरा। इससे अनेक राक्षस, उनके रथ और घोड़े, उसके नीचे दब गये और चूर-चूर हो गये। इसके बाद उसने एक और पहाड़ उठाया और राक्षसों पर दे मारा। उससे भी अनेक राक्षस विध्वस्त हुए। बहरहाल, रथ पर सवार कुछ राक्षसों ने वानरों का वध किया। उधर कुछ वानरों ने भी विशाल वृक्षों की सहायता से राक्षसों का वध किया।

हनुमान् अब आकाश में उड़ा और वहां से कुंभकर्ण पर तरह-तरह के वृक्षों और शिलाओं की वर्षा करने लगा। कुंभकर्ण ने अपने शूल से पहाड़ों को चकनाचूर कर दिया और पेड़ों को भी छिन्न-भिन्न कर दिया। फिर उसने उसी शूल से वानर सेना पर प्रहार करना शुरू किया। लेकिन उसके साथ ही हनुमान ने भी एक पहाड़ से कुंभकर्ण पर प्रहार किया।

हनुमान के प्रहार से कुंभकर्ण का शरीर घायल हुआ। उससे खून बहने लगा। वह बुरी तरह कृद्ध हो उठा। उसने अपना शूल अपने पूरे ज़ोर से हवा में घुमाकर हनुमान की ओर फेंका जिससे वह सीधा हनुमान के वक्षस्थल में घुस गया। इतने करारे प्रहार से हनुमान एकदम चीख उठा। उसके मुंह से खून की धाराएं बहने लगीं। और कुछही क्षणों में वह बेहोश होकर धरती पर आ गिरा।

एक पहाड़ नील ने भी कुंभकर्ण पर फेंका। कुंभकर्ण ने उसे अपनी मुट्ठी में भर लिया और उसे दबा कर चूर-चूर कर दिय। अब एक साथ ऋषभ, शरभ, नील, गवाक्ष और गंधमादन वानर-वीर बवंडर की तरह कुंभकर्ण पर टूट पड़े। उन्होंने शिलाओं और वृक्षों का भरपूर उपयोग किया। अपनी मुष्टियों से भी प्रहार किया। पर कुंभकर्ण ज्यों का त्यों बना रहा। उस पर इस सब का कोई असर नहीं हो रहा था, बल्कि एक तरह से वह इस स्थिति से सुख ले रहा था। फिर उसने एक साथ ही इन पांचों वीरों पर इस तरह प्रहार किया कि वे भी अपने मुंह से खून उगलने लगे और अचेत होकर भूमि पर गिर पड़े।

दंड का रूप

राजा चंद्रसेन के यहां भूषण नाम का एक विदूषक था। एक दिन चंद्रसेन को भूषण पर बड़ा स्नेह उमड़ा। बोला, "अब तुम मुझसे वह चीज़ मांगो जिससे मुझे हानि न हो और तुम्हें लाभ हो। मैं तुम्हें ज़रूर दूंगा।"

भूषण ने उतर दिया, "विदूषक का जीवन तलवार की धार पर चलने के समान है। इसलिए आपने अभी जो मुझे देने का वचन दिया है, उसका मैं उपयोग करूंगा, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर।"

राजा चंद्रसेन के एक ही बेटा था। उसका नाम रुद्रसेन था। उसे बहुत दुलार मिलता था, जिससे वह बिगड़ने लगा था। गुरुकुल में भी उसका व्यवहार कई बार ठीक नहीं होता था, इसलिए उसे अक्सर राजधानी में लौट आना पड़ता।

एक दिन चंद्रसेन ने अपने बेटे रुद्रसेन के बारे में भूषण से बात की। उसकी बात से उसकी चिंता स्पष्ट प्रकट हो रही थी।

"युवराज को लेकर आप चिंता में क्यों हैं, प्रभु?" भूषण ने पूछा।

"जब भी गुरुकुल में युवराज का व्यवहार बरदाश्त के बाहर हो जाता है, गुरुकुल के आचार्य उसे दंडस्वरूप राजधानी में धकेल देते हैं। मेरी समझ में यह बात नहीं आ रही कि उसे कैसे दुरुस्त किया जाये!" राजा ने कहा।

"अगर सच्चाई यही हो तो चिंता करने से क्या लाभ? रेत को निचोड़ कर उसमें से तेल निकाला जा सकता है, मरीचिका से पानी भी पिया जा सकता है, खरगोश के सींग भी खोज निकाले जा सकते हैं, लेकिन मूर्ख को समझाना किसी के बस का नहीं।" भूषण ने कुछ-कुछ मज़ाक में कहा।

पर विदूषक का ऐसा मज़ाक राजा को भाया

वसुंधरा वर्मा
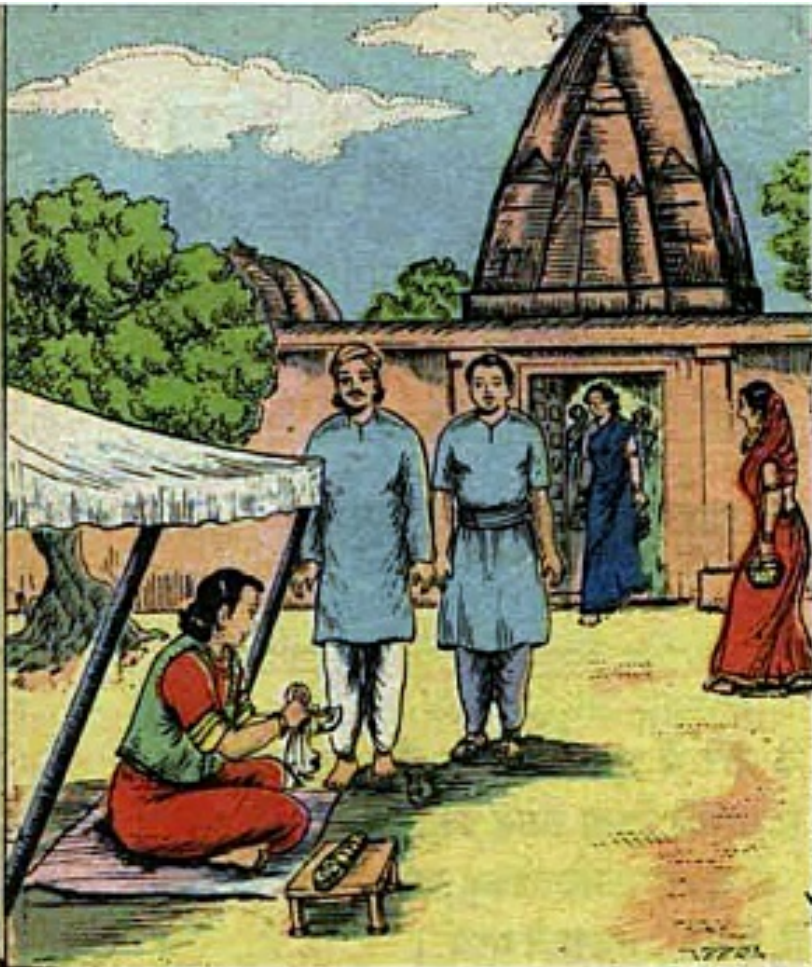
नहीं । उसका पारा चढ़ गया । कहने लगा, "क्या तुम मेरे बेटे को मूर्ख समझते हो? में अभी तुम्हें कारागार में फिंकवा देता हूं ।"

विदूषक घबरा गया । बोला, "भूल हुई, हुजूर । क्षमा कीजिए ।"

लेकिन राजा का पारा अभी तक वैसे का वैसा बना हुआ था । तब विदूषक ने राजा को हाल ही में दिये गये वचन की याद दिलाते हुए कहा, "जिससे आपको हानि न हो, लेकिन मुझे लाभ पहुंचे, मैं अब उस वचन को आप से पूरा करने के लिए विनती कर रहा हूं । मुझसे जो भूल हुई है, उसके दंडस्वरूप मैं यहां आने-जाने वालों के जूतों की सफाई करता रहूंगा । लेकिन आप किसी से यह नहीं कहेंगे कि मैं यह सब दंडस्वरूप कर रहा हूं ।" इस प्रस्ताव पर राजा ने अपनी हामी भर दी ।

अगले दिन ही भूषण महल के निकट एक मंदिर के फाटक पर बैठ गया और वहां आने-जाने वालों से कहने लगा, "महानुभाव, आप देव-दर्शन के लिए यहां आये हैं । मैं आप जैसे भक्तों के जूतों की सफाई करना चाहता हूं । मैं इससे अपने भीतर के अहंकार को खत्म कर देना चाहता हूं ।"

पहले कुछ लोगों ने उसकी बात पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, बल्कि उसका उपहास करते हुए से वहां से चले गये, पर उसने तो यह अपना रोज़मर्रा का जीवन बना लिया था । वह बहुत तड़के उठ जाता, नहा-धो कर अपने को स्वच्छ करता और फिर साफ-सुथरे कपड़े पहनकर अपने ठिकाने पर आ बैठता । साथ-साथ वह गीता के श्लोकों का पाठ भी करता रहता ।

उसे इस बात की बिलकुल कोई चिंता नहीं होती थी कि मंदिर में आने वाला अमीर है या ग़रीब । वह तो, बस भक्तों के पांवों पर से उनके जूते उतारता और उन्हें साफ करके एक तरफ रख देता ।

इस तरह कुछ दिन बीत गये । लोगों के मन में भूषण के प्रति बड़े आदर की भावना जगी । उनमें से अधिकतर अपने जूते उसकी ओर बढ़ाते समय झुककर उसे प्रणाम करते और उसमे आशिष लेते । उनमें से कुछ तो उसे साष्टांग प्रणाम करते ।

अभी तीन सप्ताह भी न बीते होंगे कि

भूषण को हर कोई पादुका योगी के नाम से पुकारने लगा ।

आख़िर यह खबर राजा चंद्रसेन तक भी पहुंची । इस पर राजा अपने परिवार के साथ उस योगी को देखने चला आया । लेकिन जब उसने देखा कि यह तो विदूषक भूषण है, तो वह एकदम चकित रह गया । भूषण ने राजा के जूतों की सफाई की और आस-पास खड़े लोगों से बोला, "महानुभाव, आज से मेरे व्रत की समाप्ति हुई । मेरे स्थान पर यदि कोई और बैठना चाहता है तो ख़ुशी से बैठ सकता है ।"

भूषण की बात सुनकर एक नहीं, अनेक लोग आगे आये और उनमें से हर कोई कहने लगा, "मैं यहां बैठूंगा । मैं बैठूंगा यहां ।"

भूषण ने उन्हें किसी तरह शांत किया और फिर उनमें से एक को पादुका योगी घोषित करते हुए बोला, "जब तुम्हें लगे कि तुम्हारे भीतर का अहंकार पूरी तरह नष्ट हो चुका है तो तुम स्वयं ही यह स्थान खाली कर दोगे और यहां किसी और को बैठने का अवसर दोगे ।" और यह कहकर भूषण राजमहल के भीतर प्रवेश कर गया ।

राजा चद्रसेन ने कहा, "जब मुझे गुस्सा आया तो तुम्हें जूतों की सफाई का दंड मिला, लेकिन तुम योगी कैसे बन गये?"

राजा की बात सुनकर भूषण मुस्करा दिया । कहने लगा, "प्रभु, ऋषि औंधा होकर लटके तो उसे तप कहा जाता है । चोर को यदि उसी तरह लटका दिया जाये तो उसे दंड कहा जायेगा । समय़ के अनुसार अच्छाई-बुराई के रंग बदलते रहते हैं । दंड का नाम न देकर आप मुझे कोई भी दंड दें, मैं उससे गौरव

प्राप्त कर लूंगा । लेकिन अगर लोगों को यह पता चल जाये कि वह काम मैं दंडस्वरूप कर रहा हूं तो लोग मुझ पर तत्थर फेंकेंगे, मेरा तिरस्कार करेंगे । लोगों को यह पता नहीं चला कि मैं दंड भुगत रहा था । इसीलिए उन्होंने मुझे योगी कहकर पुकारा जिससे मेरा मान और बढ़ा ।"

"ठीक है, तुमने यह दंड इस तरह भुगता। इसके पीछे तुम्हारा कोई खास मकसद ज़रूर रहा होगा । क्या कहना चाहते हो?" राजा ने कहा ।

"प्रभु, युवराज को गुरुकुल के आचार्य ने दंड दिया तो उसका असर युवराज पर होना चाहिए था । यानी लोगों को भी पता चलना चाहिए था कि युवराज को दंड मिला है । इससे युवराज के मन को थोड़ा कष्ट पहुंचता । यह ज़रूरी भी था । तभी युवराज को अपने किये पर पश्चात्ताप होता और उसके व्यवहार में बदलाव आने की संभावना बनती । गुरुकुल में ठीक से व्यवहार न करने पर जब उसे दंडस्वरूप राजधानी में भेजा गया तो वह यहां आकर खूब सुख-सुविधा से अपना समय बिताकर वापस गुरुकुल को जाता रहा । इससे उस पर कैसे प्रभाव की आप आशा करते हैं! उसे अपनी भूल का एहसास होना चाहिए था । बस, मुझे यही कहना है," भूषण ने नम्रतापूर्वक कहा ।

राजा चंद्रसेन थोड़ी देर तक सोचता रहा । फिर बोला, "पादुका योगी की ख्याति से आकर्षित होकर नगर का हर कोई व्यक्ति पादुका योगी बनने की होड़ पर उतर आया है । तुमने ठीक कहा । भविष्य में युवराज को जो दंड मिलेगा, वह दंड के रूप में ही होगा। मैं गुरुकुल के आचार्य को कहलवा भेजूंगा कि आइंदा, युवराज जब भी किसी प्रकार की उद्दंडता करे, उसे अन्य शिष्यों के समान ही गुरुकुल के नियमों के अनुसार दंड दिया जाये ।"

फिर उसने इस बात पर हर्ष प्रकट किया कि उसका ध्यान ऐसी चूक की तरफ आकर्षित किया गया । उसने भूषण को अमूल्य भेंट देकर पुरस्कृत किया ।

दंड का रूप बदल जाने के बाद से युवराज में भी परिवर्तन देखा जाने लगा । उसके व्यवहार में अब काफी बदलाव आ गया था ।

अनपढ़ सामंत

स्पेन में एक सामंत रहता था। वह अनपढ़ था। उसमें यह बात घर कर गयी थी कि वह सब कुछ जानता है-उसे पढ़ने लिखने की कोई ज़रूरत नहीं।

एक दिन सामंत को राजा के यहां से एक हुक्मनामा मिला। कहीं युद्ध चल रहा था। हुक्मनामे में लिखा था कि वह फौरन अपने सैनिकों के साथ युद्ध के लिए रवाना हो जाये और शत्रु से युद्ध करे।

सामंत ने तुरंत अपने सैनिकों को युद्ध के लिए तैयार होने का आदेश दिया और फिर वह उन सैनिकों के साथ युद्ध-भूमि के लिए चल पड़ा। साथ में उसके उसका पढ़ा लिखा, किंतु ग़रीब, सहायक भी था। कुछ समय तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। वह सहायक हर रोज़ युद्ध का विवरण तैयार करता और उस सामंत की मोहर लगवा कर राजा को भिजवा देता। लकिन एक दिन उसे अचानक शत्रु का बाण आ लगा और उस की वहीं मृत्यु हो गयी।

अब सामंत को नये सहायक की ज़रूरत पड़ी। लेकिन ऐसे सहायक का मिलना इतना आसान नहीं था। इस पर भी सामंत का ठसका वैसे ही बना रहा। उसके मन में यह कभी नहीं आया कि यदि वह स्वयं पढ़ा-लिखा होता तो ऐसी नौबत कभी न आती।

तभी एक और समस्या उठ खड़ी हुई। राजा का एक दूत आया और सामंत को एक पत्र देकर तुरंत वहां से लौट गया। सामंत को पता नहीं चला कि उस नये हुक्मनामे में क्या लिखा है। क्या राजा युद्ध जारी रखना चाहता है या उसे रोकने के पक्ष में है?

सामंत की हालत अब ऐसी हो रही थी जैसे कोई अंधेरे में अपना रास्ता खोजने की

स्पेन की लोककथा

कोशिश में छटपटा रहा हो । उसी दौरान उसे एक सैनिक दीख पड़ा । वह सामंत की जान-पहचान का था । पढ़ा-लिखा भी था ।

सामंत ने उसे बुलाया और उसके हाथ में पत्र थमाते हुए बोला, "इसे पढ़कर बताओ कि इसमें क्या लिखा है! अगर गलत पढ़ोगे तो तुम्हारी चमड़ी उधेड़ दूंगा । इसमें जो कुछ भी लिखा है, वह गुप्त रहना चाहिए । हम दोनों के अलावा किसी को इसकी भनक भी नहीं मिलनी चाहिए । इस बात का खास ख़्याल रखो । समझे ।"

सैनिक को सामंत पर गुस्सा आ गया । वह पहले से ही सामंत पर बहुत ख़फ़ा था, क्योंकि कुछ समय पहले उसे एक छोटी-सी भूल हो गयी थी और सामंत ने उसे बड़ी बेरहमी से कोड़े से पिटवाया था, यहां तक कि वह अधमरा हो गया था । अब सामंत पर उसे अपना गुस्सा उतारने का तथा उससे बदला लेने का अच्छा मौका मिल गया था । इसलिए उसने पत्र को यों ही उलट-पलट कर देखा और फिर अपना आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहने लगा, "उफ! ग़जब हो गया! राजा का आदेश है कि आप सेनानायक का काम छोड़कर फौरन उनके दरबार में उपस्थित हों । इसमें यह भी लिखा है कि किसी ने आप पर आरोप लगाया है कि आप राजद्रोही हैं ।"

सैनिक के मुंह से ऐसी बात सुनकर सामंत तिलमिला उठा । ताव में आकर बोला, "क्या कहा! मैं और राजद्रोही! ऐसी अफवाह उड़ाने वाला कौन हो सकता है? मैं अभी दरबार में जाकर इसका पता लगाता हूं और ऐसे दुष्ट का धड़ से सर उड़ा दूंगा ।"

यह कहकर वह तुरंत राजधानी के लिए निकल पड़ा । काफी लंबा सफर था । जहां रात आयी, वहां न कोई गांव था और न कोई इक्का-दुक्का झोंपड़ा । खैर, सामंत ने एक पेड़ के साथ अपने घोड़े को बांध दिया और स्वयं भूमि पर लेट गया । सुबह जब उठा तो उसने देखा की रास्ते के एक तरफ एक पत्थर पर कुछ लिखा हुआ है । अनपढ़ तो वह था ही, इसलिए कैसे जान पाता कि वहं क्या लिखा है । फिर न जाने उसके मन में क्या आया, और वह उस पत्थर के और निकट हो गया और उसे बड़े ध्यान

से देखने लगा। दरअसल, उस पत्थर पर लिखा था–इधर मत आओ, खतरा है। लेकिन सामंत तो इससे बेखबर था। वह जैसे ही उस पत्थर के निकट हुआ, उसका पांव फिसला और वह एक खाई में जा पड़ा। खाई गहरी थी। इसलिए उसे उससे बाहर आने में काफ़ी परेशानी उठानी पड़ी। उसकी कमर में भी कुछ चोट आयी थी, जिससे उसके लिए चलना भी मुश्किल हो गया था। फिर भी वह किसी न किसी तरह अपने घोड़े पर सवार हो गया और पास के एक गांव में पहुंचा। गांव में उसे एक सराय मिल गयी जहां उसने रात गुज़ारी।

सराय में उसे पड़ोस के गांव का एक व्यक्ति भी दिखा। वह सामंत की आंख बचा कर वहां से भाग खड़ा होना चाहता था। लेकिन जब उसका सामंत से सामना हुआ तो वह मारे डर के सिहर उठा। लेकिन सामंत को उसे देखकर बड़ा संतोष हुआ। वह बोला, "अरे, तुम तो आज भगवान् के रूप में मुझे मिले हो। मेरी हालत देख रहे हो? ऐसी हालत में मैं राजा के सामने कैसे उपस्थित हो सकता हूं? राजा को किसी न किसी तरह यह लिखकर भिजवाना है कि मैं इस हालत में हूं और मुझ पर बुरी बीती है। मैं जैसे ही ठीक हो जाऊंगा, राजा के दर्शन करूंगा, और मेरे बारे में झूठी अफवाहें उड़ाने वाले को ठिकाने लगाऊंगा।"

वह व्यक्ति लिखना जानता था, लेकिन उसने ऐसा कुछ नहीं लिखा जैसा सामंत ने चाहा था। बल्कि उसने राजा को तरह-तरह की गालियां लिख दीं और गालियां लिखे उस कागज़ पर सामंत की मोहर लगवा कर उसे राजा को भिजवा दिया।

राजा ने जब वह पत्र देखा तो वह ए कदम बौखला उठा। उसने अपने सेनाध्यक्ष को बुलवाया और उसे आदेश दिया कि वह पत्र लिखने वाले इस दुष्ट को ज़िंदा या मुर्दा, जल्दी-जल्दी उसके सामने हाज़िर करे।

सामंत को राजा के सामने पेश किया गया। सामंत था तो घमंडी ही। इसलिए उसने राजा को किसी तरह की कोई सफाई नहीं दी, बल्कि चुपचाप खड़ा रहा। लिहाज़ा, उसे कारागार में डाल दिया गया।

राजा ने उससे सच उगलवाने के लिए

उसे तरह-तरह की यातनाएं दीं, लेकिन सामंत अपना मुंह खोलता ही न था। उसे इसमें अपना अपमान दिखता था कि वह राजा से कहे कि वह निर्दोष है। आखिर राजा तंग आ गया। उसने कहा, "इस राजद्रोही के लिए मैं शिरच्छेदन का दंड देना चाहता हूं।"

राजा की बात सुनकर न्यायाधिकारी बोला, "महाराज, मुझे कुछ संदेह हो रहा है। जिन पत्रों पर इसने अपनी मोहर लगायी थी, हो सकता है इसे पता ही न हो कि उनमें क्या लिखा है।"

वहां पर एक और कर्मचारी भी मौजूद था। उसने कहा, "हुज़ूर, इसके बारे में सभी जानते हैं कि यह अनपढ़ है।"

राजा को हैरानी हुई। बोला, "अनपढ़? मैंने स्वयं पांच वर्ष तक कड़ी मेहनत करके पढ़ना-लिखना सीखा। इस बुद्धिविहीन को इतना भी नहीं सूझा! खैर, यह कैसे प्रमाणित हो कि यह अनपढ़ है?"

न्यायाधिकारी ने एक कागज़ पर लिखा कि राजा ने उसे मृत्यु दंड देने का आदेश दिया है। वह कागज उसने सामंत के सामने रखा और उससे कहा कि वह उस पर हस्ताक्षर कर दे, उसे छोड़ दिया जायेगा।

"इसमें क्या लिखा?" सामंत ने कहा।

"इसमें लिख है कि तुम बेकसूर हो। तुम पर जो आरोप लगाया गया था, वह झूठा साबित हुआ है।" न्यायाधिकारी ने कहा।

"अच्छा, यह लिखा है! तब तो मैं इस पर ज़रूर हस्ताक्षर करूंगा।" सामंत बोला, फिर उसने अपनी मोहर उस पर लगा दी।

अब राजा को पता चल गया था कि यह सामंत एकदम अनपढ़ है। इसलिए उसने उसे रिहा करने का आदेश दिया और जिसने सामंत के साथ इस तरह का खिलवाड़ किया था, उसे पकड़ लिया गया।

बेशक, पढ़ा-लिखा होना ज़रूरी है, और इसकी अवहेलना करना भारी ग़लती है। विश्वासघात करना तो उससे भी भारी गलती है, यह एक बहुत बड़ा अपराध है और अपराधी को दंड मिलना ही चाहिए। इसलिए विश्वासघात करने वाले व्यक्ति को आजीवन कारावास का दंड मिला।
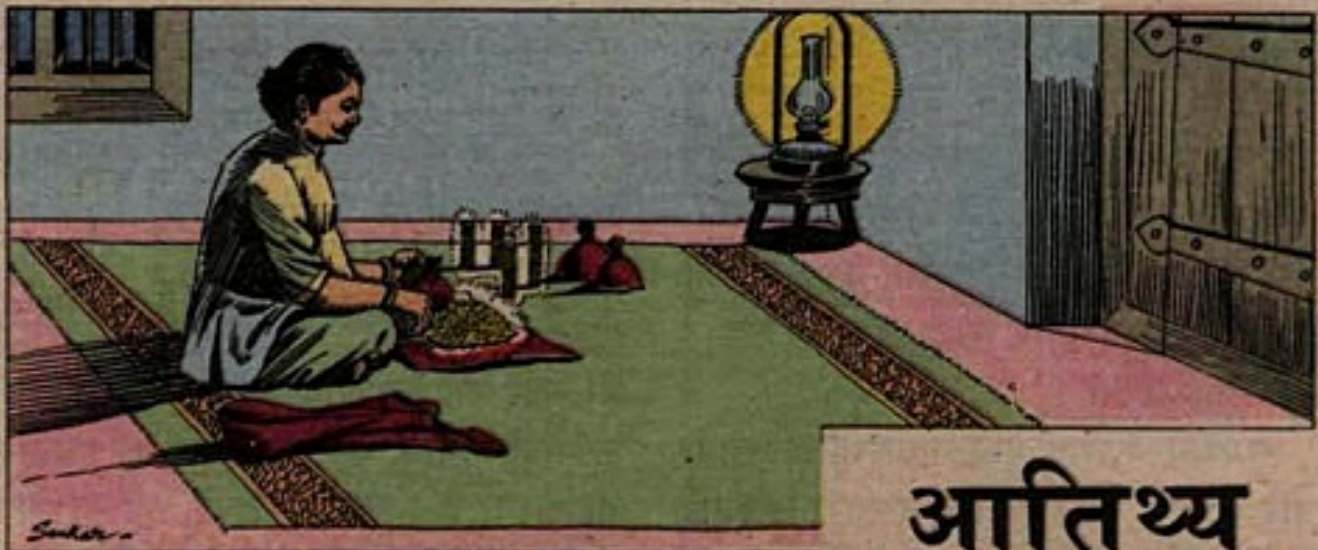
आतिथ्य

श्रीधरपुर नाम के नगर में कमलनाथ नाम का एक व्यापारी रहता था। उसका व्यापार खूब पनप रहा था। नगर में उसका मकान भी काफी बड़ा था।

एक रात वह कमरे में बैठा पैसा गिन रहा था। इतने में किसी ने उसका दरवाज़ा खटखटाया। कमलनाथ ने तुरंत उस पैसे पर चादर डालकर उसे ढक दिया और फिर दरवाज़ा खोला तो सामने रामधन दिखाई पड़ा। रामधन कमलनाथ का दूर का रिश्तेदार तो था ही, दोनों में दोस्ती भी गाढ़ी थी। इसलिए वह सीधा उसके उस कमरे में ही चला आया और चटाई पर बैठ गया।

कमलनाथ को थोड़ी परेशानी हुई। पर पूछा, "इतनी रात गये कैसे आना हुआ?"

इस पर रामधन बोला, "मुझे चंद रुपयों की ज़रूरत आ पड़ी है। इसीलिए मैं इस वक्त तुम्हारे यहां आया हूं।"

कमलनाथ कहने लगा, "कितने रुपयों से तुम्हारा काम चल जायेगा?"

"पच्ची रुपये!" रामधन ने उत्तर दिया।

कमलनाथ एकाएक बोला, "इन दिनों व्यापार बहुत मंदा है। आज दिन भर में केवल पांच रुपये की ही बिक्री हुई है।"

कमलनाथ का उत्तर सुनकर रामधन चुप नहीं हुआ। वह बार-बार अपनी रट लगाये रहा। उसने यह भी कहा कि वह सूद देने को भी तैयार है, पर उसे यह रकम मिलनी ही चाहिए।

रामधन ने अपनी बात पूरी की ही थी कि खिड़की में से ज़ोर-हवा का एक झोंका आया और उसने कमरे की बत्ती बझा दी। कमरे में अब घुप अंधेरा हो गया था।

कमलनाथ को यह उम्मीद न थी कि बत्ती इस तरह गुल हो जायेगी। पर लालटेन तो

२५ वर्ष पूर्व चंदामामा में प्रकाशित कहानी

लालटेन ही होती है न! कमलनाथ को कुछ घबराहट हुई। उसने उस घबराहट में रामधन के दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिये और बड़े प्यार से कहने लगा, "रामधन, बुरा मत मानना। मेरी हालत काफी पतली हैं, वरना मैं तुम्हारी मदद ज़रूर करता। मुझे माफ करना।"

रामधन ने उसके प्रति सहानुभूति दिखायी और बोला, "ठीक है, यह तुम्हारी मज़बूरी है। जब तुम्हारे पास पैसा है ही नहीं तो तुम कहां से दोगे! चलो, छोड़ो मुझे। मैं अब कहीं और से कोशिश करता हूं।"

लेकिन कमलनाथ उसके हाथ वैसे ही थामे रहा, और मिन्नत के स्वर में बोला, "अरे, बहुत दिनों के बाद आये हो। थोड़ा इंतज़ार करो। हम साथ-साथ बैठकर भोजन करेंगे।"

रामधन ने कहा, "मैं तो खाना खाकर आया हूं।"

लेकिन कमलनाथ उसके हाथ छोड़ने को तैयार ही न था और साथ-साथ मिन्नत भी किये जा रहा था, "ऐसा मत कहो, मेरे भाई। आज तो तुम्हें मेरे साथ बैठकर भोजन करना ही होगा।"

इतने में कमलनाथ की पत्नी एक दीपक जलाकर वहां ले आयी। अब कमलनाथ ने रामधन के हाथ फौरन छोड़ दिये और कहने लगा, "अरे, अरे। मैं भी कैसा मूर्ख हूं! मुझे यह ख़्याल ही नहीं रहा कि रात इतनी हो गयी है और तुम्हें पैसों का इंतज़ाम भी करना है। जाओ, जाओ, भोजन फिर कभी कर लेंगे।"

कमलनाथ से छुट्टी पाकर रामधन उसके यहां से चला आया। कमलनाथ की पत्नी की समझ में यह बात नहीं आयी। पहले तो उसका पति रामधन के हाथ छोड़ ही नहीं रहा था, लेकिन अब कैसे छोड़ दिये?

पूछने पर कमलनाथ ने हंसते हुए कहा, "अरी पगली, बत्ती बुझ गयी थी और दिन भर की कमाई यहीं चटाई पर चादर से ढकी पड़ी थी। मुझे इस रक़म की हिफ़ाज़त भी तो करनी थी। इसीलिए मुझे यह नाटक करना पड़ा।" पति की बात सुनकर पत्नी हतप्रभ रह गयी।

नीला गुलाब

आस्ट्रेलिया के कुछ वैज्ञानिक पिछले चार वर्षों से एक अनुसंधान में लगे हुए हैं। वे नीले रंग के पेटूनिया और इरिश जैसे फूलों के पौधों से उन फूलों को नीला रंग प्रदान करने वाले तत्त्व निकाल कर उन तत्त्वों को गुलाब के पौधों में डाल रहे हैं। लगता है कि वे अब सफलता के द्वार पर पहुंचने वाले हैं। संभव है १९९३ के अंत तक पहला नीला गुलाब उपलब्ध हो जाये। तब एक असाध्य काम साध्य माना जाने लगेगा, और उद्यान-कला में भी एक तरह की क्रांति आ जायेगी।
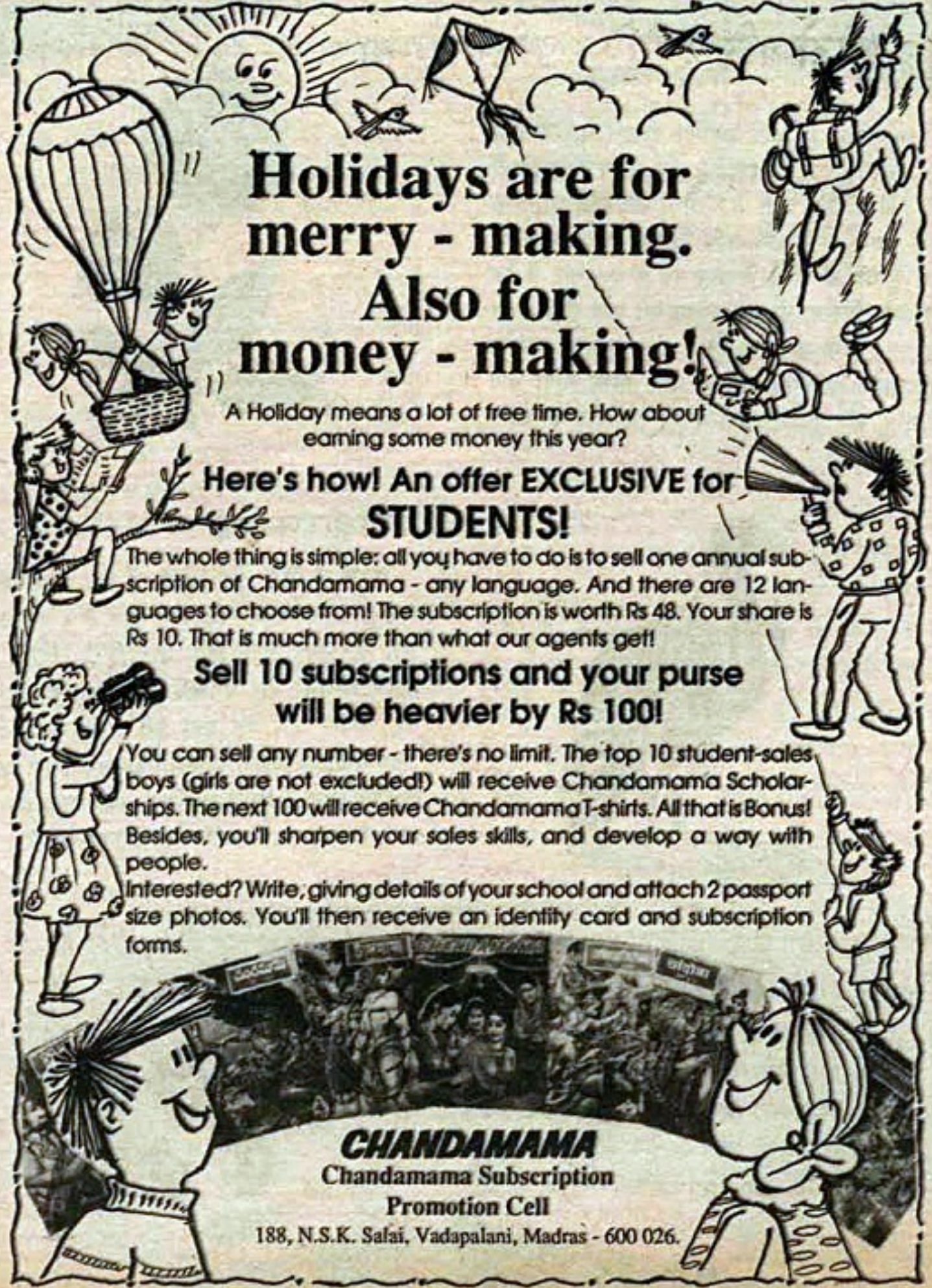
असाधारण गिद्ध

भारत में गिद्ध आठ किस्म के हैं। पांडिचेरी में एक खास किस्म का गिद्ध पाया जाता है। यह किस्म अब धीरे-धीरे खत्म होती जा रही है। पहले यह किस्म श्रीलंका और बंगलादेश में देखने को मिलती थी, लेकिन अब यह वहां पूरी तरह गायब है। अहमदाबाद के कमला नेहरू चिड़ियाघर में इस किस्म के तीन गिद्ध हैं जिन्हें राजगिद्ध कहा जाता है। ये आम तौर पर मानवों के बीच आने से कतराते हैं।

बहुत बड़ी संख्या

अन्य सभी प्राणियों की तुलना में झींगरों की संख्या सर्वाधिक है। इनकी लगभग दो लाख पचास हजार किस्में हैं। यदि सभी कीड़ों को इनमें शामिल कर लें तो इनकी पचास लाख किस्में होंगी। और इनकी कुल संख्या लगभग १,०००,०००,०००,०००,०००,००० मानी जाती है।

Holidays are for merry - making. Also for money - making!
A Holiday means a lot of free time. How about earning some money this year?
Here's how! An offer EXCLUSIVE for STUDENTS!
The whole thing is simple: all you have to do is to sell one annual subscription of Chandamama - any language. And there are 12 languages to choose from! The subscription is worth Rs 48. Your share is Rs 10. That is much more than what our agents get!
Sell 10 subscriptions and your purse will be heavier by Rs 100!
You can sell any number - there's no limit. The top 10 student-sales boys (girls are not excluded!) will receive Chandamama Scholarships. The next 100 will receive Chandamama T-shirts. All that is Bonus! Besides, you'll sharpen your sales skills, and develop a way with people.
Interested? Write, giving details of your school and attach 2 passport size photos. You'll then receive an identity card and subscription forms.
CHANDAMAMA
Chandamama Subscription
Promotion Cell
188, N.S.K. Salai, Vadapalani, Madras - 600 026.

फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां अक्तूबर, १९९२ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

M. Natarajan

Mahatesh C. Morabad.

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियां एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ १० अगस्त'९२ तक परिचयोक्तियां प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियां केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जून १९९२ की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : ढ़ोंगी साधू छैल छबीले!

दूसरा फोटो : बचपन के दिन बड़े रसीले!!

प्रेषिका : कुमारी शिप्रा, कॅब्रिया पथ, देवघड़-८१४११२ (बिहार)

पुरस्कार की राशि रु. १००/- इस महीने के अंत में भेजी जाएगी ।

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

अपने प्यारे चहेते के लिए जो हो दूर सुदूर
है न यहाँ अनोखा उपहार जो होगा प्यार भरपूर

चन्दामामा

प्यारी-प्यारी सी चंदामामा दीजिए उसे उसकी अपनी पसंद की भाषा में—

आसामी, बंगला, अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी, कन्नड

मलयालम, मराठी, उड़िया, संस्कृत, तमिल या तेलुगु

—और घर से अलग कहीं दूर रहे उसे लूटने दीजिए घर की मौज-मस्ती

चन्दे की दरें (वार्षिक)

आस्ट्रेलिया, जापान, मलेशिया और श्रीलंका के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 105.00 वायु सेवा से रु. 252.00

फ्रान्स, सिंगापुर, यू.के., यू.एस.ए.,
पश्चिम जर्मनी और दूसरे देशों के लिए

समुद्री जहाज़ से रु. 111.00 वायु सेवा से रु. 252.00

अपने चन्दे की रकम डिमांड ड्राफ्ट या मनी ऑर्डर द्वारा
'चन्दामामा पब्लिकेशन्स' के नाम से निम्न पते पर भेजिए:

सर्क्युलेशन मैनेजर, चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास-६०० ०२६.

FREE!
10 NOTE BOOK LABELS INSIDE EVERY 100 GM POUCH OF COOKIES.
मिठाई में
नारियल
मुँह में
हलचल
nutrine COOKIES
nutrine
COOKIES
बच्चे झूमें-गायें, मौज मनायें
कोकानाका कुकीज
Visesh NC/9090/Hin